A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 10 नवंबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 44, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

धरोहर

फोटो : मणि मोहन

सुप्रभात

कहां कोई मुक्त होता
समय बांधता है
और एक दिन समय मुक्त कर देता है
उससे मत कुछ पूछो
जो समय से मुक्त हो गया
जो मुक्त होते होते इतना राग दे गया कि
उस राग बंधन से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता
यहां तक कि वह स्वयं मुक्त नहीं होता
पर मुक्ति का प्रसाद इतना सुंदर है कि
मुक्त होने के लिए छटपटा रहे हैं
और यह मुक्ति कहां आसानी से मिलती
समय में होते हुए समय से निकल जाना
कहां कभी आसान रहा
कोई भी समय के राग से
कहां निकल पाया ,यह बात दीगर है कि
एक समय के बाद
समय , समय को भी मुक्त कर देता है ।

- विवेक कुमार मिश्र

पूर्व राष्ट्रपति श्री कोविंद का राजभवन आगमन पर हुआ गरिमामय स्वागत

भोपाल (नप्र)। भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद का राजभवन आगमन पर गरिमामय स्वागत हुआ। पूर्व राष्ट्रपति श्री कोविंद का राजभवन में म.प्र. उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति श्री सुरेश कुमार कैत ने आत्मीय स्वागत किया। पूर्व राष्ट्रपति श्री कोविंद के साथ उनकी पत्नी श्रीमती सविता कोविंद भी पधारी हैं।

जहां कांग्रेस की सरकार वो बन गए शाही परिवार के 'एटीएम'

महाराष्ट्र के अकोला से कांग्रेस और गांधी फैमिली पर बरसे पीएम मोदी

कहा-चुनाव महाराष्ट्र में है और वसूली इन तीन राज्यों में डबल हो गई है

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार दूसरे दिन रैली की। उन्होंने शनिवार को अकोला में एक बार फिर 'एक हैं तो सेफ हैं' का नारा दिया। इससे पहले 8 नवंबर को नासिक और धुले की रैली में भी उन्होंने यह नारा लगाया था।

अकोला की रैली में पीएम के निशाने पर एक बार फिर कांग्रेस ही रही। उद्धव ठाकरे और शरद पवार के बारे में एक शब्द नहीं बोला। उन्होंने कहा- जम्मू-कश्मीर विधानसभा में आर्टिकल 370 की वापसी की मांग हो रही है। कांग्रेस और उसके सहयोगी इसका समर्थन करते हैं। पाकिस्तान भी यही चाहता है। पीएम ने कहा- कांग्रेस की सरकार जिस राज्य में बन जाती है, वह राज्य शाही परिवार (गांधी परिवार) के लिए एटीएम बन जाता है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक सरकार का जिक्र किया। कहा- चुनाव महाराष्ट्र में है और वसूली इन राज्यों में डबल हो गई है। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि चुनाव जीतने के बाद क्या लूट होगी।

मोदी जी बड़े प्लेन में उड़ते हैं, बोझ आम जनता को उठाना पड़ता है

झारखंड के धनबाद में राहुल गांधी का प्रधानमंत्री मोदी पर बड़ा हमला

रांची (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव के पहले फेज के प्रचार में नेता पूरी ताकत से लग गए हैं। शनिवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने धनबाद के बाघमारा और जमशेदपुर में चुनावी सभा की। इसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा- मोदी जी बड़े-बड़े भाषण करते हैं। बड़े-बड़े प्लेन में उड़ते हैं। लेकिन बोझ

आम आदमी को उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा कि मोदी जी गरीबों से हाथ मिलाने से भी कतराते हैं। वो अंबानी और अडानी के साथ जाएंगे, लेकिन गरीब दलितों, पिछड़ों से मिलना तक नहीं चाहते। 90 अफसर हिंदुस्तान के बजट को बनाते हैं। लेकिन इन नब्बे अफसरों में से केवल एक आदिवासी अफसर है। उन्होंने लोगों के बीच इंडिया ब्लॉक की सात गारंटी को दोहराया। इसमें उन्होंने आरक्षण के दायरे को बढ़ाने के साथ-साथ जातिगत जनगणना कराने की बातें कही।

हमास नेताओं को देश छोड़ने का अल्टीमेटम

अमेरिका के दबाव में कतर का सबसे बड़ा ऐक्शन

तेलअवीव (एजेंसी)। इजरायल द्वारा गाजा में किए जा रहे हमलों के चलते कतर में जाकर बसे हमास के नेताओं को बड़ा झटका लगा है, क्योंकि कतर ने उन सभी को देश छोड़ने का अल्टीमेटम दे दिया है। बता दें कि कतर ने यह आदेश अमेरिका के दबाव के बाद जारी किया है। ऐसे में अब हमास के बड़े नेताओं की मुश्किलें बढ़ सकती है क्योंकि वे लंबे वक्त से कतर की राजधानी दोहा में रह रहे थे।

'लाड़ली बहना योजना' में बहनों को दी जा रही राशि में की जायेगी वृद्धि : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रदेश की 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों के खाते में अंतरित किये 1573 करोड़ रूपये

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लाड़ली बहना योजना सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन की एक बड़ी पहल है। इस योजना की शुरूआत में पात्र लाड़ली बहनों को एक हजार रूपये प्रतिमाह दिये गये। इसके बाद यह राशि बढ़ाकर 1250 रूपये प्रतिमाह की गई। इस राशि में आगे और भी वृद्धि की जायेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नारी सशक्तिकरण के लिए राज्य शासन द्वारा महिलाओं को एक और सौगात दी जा रही है। अब शासकीय सेवाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत से बढ़ाकर 35 प्रतिशत का आरक्षण मिलेगा। यह नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश नारी सशक्तिकरण की दिशा में नया मुकाम हासिल कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भी लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की गई है।

नारी शक्ति के जोश और जुनून को देख मुख्यमंत्री ने भी किया शस्त्रकला प्रदर्शन

आयोजक संसथा को मिलेंगे पाँच लाख रूपये

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार इंदौर में नारी शक्ति के तलवारबाजी के वर्ल्ड रिकार्ड कार्यक्रम 'शौर्य वीरा' में पहुंचे। उन्होंने 5 हजार से अधिक महिलाओं और बालिकाओं को जोश और जुनून के साथ तलवारबाजी करते हुए देखा तो वे अपने आप को रोक नहीं सके। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दोनों हाथों में तलवार थामी और सांकेतिक रूप से शस्त्र कला का प्रदर्शन भी किया। उन्होंने दोनों हाथों से तलवारबाजी के हुनर दिखाये। देश में पहली बार 5 हजार महिलाओं ने एक साथ, एक समय और एक स्थान पर तलवारबाजी का सामूहिक प्रदर्शन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस तरह के आयोजन के लिये आयोजक संस्था को पाँच लाख रूपये देने की घोषणा भी की।

'एएमयू' सिर्फ मुस्लिमों की नहीं, सबको आरक्षण मिले

सीएम योगी बोले-सरकार का पैसा लगा, आंखों में पट्टी बांधकर मत बैठिए

अलीगढ़ (एजेंसी)। सीएम योगी ने शनिवार को अलीगढ़ के खैर में चुनावी रैली की। इस दौरान अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक दर्जे को लेकर पहली बार प्रतिक्रिया दी। कहा- यूनिवर्सिटी में मुस्लिमों को 50 फीसदी आरक्षण मिलता है। ये व्यवस्था वे लोग खुद करते हैं। ये कैसे हो सकता है। इसमें भारत का भी पैसा लगा है। इसलिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़ों को भी आरक्षण मिलना चाहिए। यही नहीं, वहां के नौकरियों भी आरक्षण मिलना चाहिए लेकिन ये सुविधा भी बंद की गई।

मैं इसलिए बार-बार कहता हूं...बंटिए मत

अलीगढ़ में कांग्रेस ने जिस राजा महेंद्र प्रताप सिंह को भुला दिया था, उन्हीं राजा महेंद्र के नाम पर अलीगढ़ में राज्य विश्वविद्यालय दिया है। बंटिए मत। बंटे थे तो कटे थे। मैं इसीलिए बार-बार कहता हूं। देश का इतिहास बताता है कि बंटे थे, तो राम मंदिर का अपमान हमें झेलना पड़ा था। मथुरा में भगवान कान्हा की जन्मभूमि का अपमान सामने आया। काशी में भगवान विश्वनाथ का अपमान सामने आया। हमारी बहन-बेटियों को क्या कुछ नहीं सहना पड़ा। इन सबके बावजूद अगर हम आंखों में पट्टी बांधकर जाति और स्वार्थों में बंटें हैं तो कटने के सिवाय कुछ नहीं बचा है।

जिसने बेटियों को छेड़ा, उसका यमराज इंतजार करता है

अलीगढ़ में पहले 10-10 दिन का कर्फ्यू लगता था। आज साढ़े सात साल में कोई उपद्रव नहीं हुआ। किसी ने गुंडागर्दी, उपद्रव या बहन-बेटियों को छेड़नी की कोशिश नहीं की। उन्हें पता है कि ऐसा किया तो उसका यमराज इंतजार कर रहा होगा। दूसरी ओर उसकी संपत्ति जब्त कर गरीबों में बांटने की व्यवस्था की जा रही होगी। पहले पेंशन भी सपाइयों को मिलती थी। आम जनता को नहीं। जब डबल इंजन की सरकार आई तो बिना भेदभाव के पेंशन मिल रही है। अलीगढ़ का ताला उद्योग भी पुनर्जीवित हो गया। अब अलीगढ़ में भी अपना विश्वविद्यालय हो गया। विश्वविद्यालय आपकी पीढ़ी को बनाएगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 10 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

सरकार, दिव्यांगजनों के सामान्य जीवन यापन के लिये हर तरह की करेगी मदद : मुख्यमंत्री

470 दिव्यांगजनों को 1 करोड़ 33 लाख रूपये के सहायक उपकरण वितरित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सरकार दिव्यांगजनों के सामान्य जीवन यापन के लिये हर तरह की मदद के लिये तत्पर है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि क्षेत्र में इन वर्गों के लोगों ने सदैव ही अपना परचम लहराया है। इतिहास के प्रसिद्ध शास्त्रार्थी अष्टावक्र, सूरदास, संगीतकार रविन्द्र जैन हों या संत रामभद्राचार्य, सभी ने दिव्यांगता को धता बता अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार दिव्यांगजनों को अवसर प्रदान करने के लिये संकल्पित हैं। यह प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय सेवा में आने वाले दिव्यांगजन पूरी दक्षता के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक संभागीय कमिश्नर जो दिव्यांग होने के बाद भी पिछले 6 माह से अपने दायित्वों का उत्कृष्टतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। सरकार दिव्यांगों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रतिबद्ध हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण वितरण का मौका दिये जाने पर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए कहा कि जीवन का नाम ही संघर्ष है। इस संघर्ष में विजयी होने के लिये सरकार सदैव ही दिव्यांगजनों के साथ खड़ी है। उन्होंने दिव्यांगों और महिलाओं के लिये

शासकीय सेवा में आरक्षण नियमों पर भी जिक्र किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कहा कि पूरे देश में मध्यप्रदेश एक मात्र ऐसा राज्य है, जिसने महिलाओं को 35 प्रतिशत का आरक्षण दिया है। इसके अलावा आजीविका के लिये प्रोत्साहन और मदद का भरोसा दिलाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को इंदौर के ग्रामीण हाट बाजार में आयोजित कार्यक्रम में इंदौर के 470 दिव्यांगजनों को लेपटॉप, मोट्रेट ट्राईसिकल सहित अन्य सहायक उपकरण वितरित किये। दिव्यांगजनों को समाज की मुख्य धारा से जोडने के लिए उन्हें आत्म-सम्मान से जीवन-यापन करने के लिए राज्य सरकार के सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, भारत सरकार की एडिप योजना तथा अवंतिका गैस एजेन्सी के सीएसआर के साथ भारतीय रेडक्रास सोसायटी के सहयोग से इंदौर जिले के 155 दिव्यांगजनों को मोट्रेट ट्राईसाइकल, नि:शक्त शिक्षा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 81 छात्र/छात्राओं को लैपटॉप, 6 दम्पतियों को मुख्यमंत्री नि:शक्त विवाह प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता, 130 दिव्यांग वृद्धजनों को डिजीटल श्रवणयंत्र, 99 दिव्यांगजनों को व्हील चेयर, सी.पी.वेयर, बैशाखी और कैलीपर्स दिये गये। जिले के कुल 470 दिव्यांगजनों को 1 करोड़ 33 लाख रूपये की सामग्री का वितरण किया गया। इसके अलावा कलेक्टर श्री आशीष सिंह की पहल पर दिव्यांगजनों को निजी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रारंभ किये गए सशक्त दिव्यांग रोजगार पोर्टल के माध्यम से चयनित पाँच दिव्यांगजनों को नियुक्ति-पत्र भी सौंपे गये।

आरंभ में मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा दिव्यांगजनों का पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया। अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

सीएम बोले- कांग्रेस और कंस में कोई अंतर नहीं

बुधनी में कहा- दोनों धर्म विरोधी; उठक-बैठक लगाए तो भी जनता माफ नहीं करेगी

बुधनी (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कांग्रेस की तुलना कंस से की है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और कंस में कोई अंतर नहीं है। कंस भी धर्म विरोधी था, कांग्रेस भी धर्म विरोधी है। कांग्रेस की विचारधारा लोगों में फूट पैदा करने वाली है।मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को बुधनी विधानसभा उपचुनाव को लेकर भैरूंदा के सतराना गांव में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कान पकड़कर उठक-बैठक भी लगाए तो उसे अपने कामों की माफी नहीं मिलेगी।

सीएम बोले- कांग्रेस के माथे पर लगा कलंक कभी नहीं मिटेगा-सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस अगर समय बुधनी को समय पर बिजली, पानी और सड़कें उपलब्ध करवा देती तो आज क्षेत्र के सैकड़ों बच्चे डॉक्टर वकील बन चुके होते। लेकिन ऐसा नहीं हो सका, जिसका कलंक कांग्रेस के माथे पर लगा हुआ है, जो कभी नहीं मिटेगा।डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस के 55 साल में ऐसा कोई साल नहीं गया जहां दंगे ना हुए हो, लेकिन हमारी सरकार में ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि हम सबको साथ लेकर चलने में विश्वास रखते हैं। कांग्रेस की सरकार में पाकिस्तान आंख दिखाता था, लेकिन मोदी सरकार आज उसे घर में घुसकर मारती है।

मध्यप्रदेश में एक मिस्टर बंटाधार थे, उन्होंने बंटाधार किया -मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस ने देश और प्रदेश पर वर्षों राज किया, लेकिन उनकी सरकारों में विकास के नाम पर कुछ नहीं हुआ। मध्यप्रदेश में तो एक मिस्टर बंटाधार थे, जिन्होंने पूरे मध्य प्रदेश का ही बंटाधार कर दिया। अब वे फिर से वोट मांगने के लिए बुधनी में आ रहे हैं, लेकिन उनकी बातों में नहीं आना है।

`केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी को विकास का रोड मॉडल बनाया-मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी को विकास का रोड मॉडल बनाया। अब बुधनी के विकास की तर्ज पर मध्यप्रदेश का विकास किया जा रहा है।

सीजेआई बनने से पहले जस्टिस खन्ना ने मॉर्निंग वॉक छोड़ी

सिक्योरिटी के साथ जाने की सलाह दी गई थी,इनकार कर दिया, बोले-आदत नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)।11 नवंबर को भारत के मुख्य न्यायाधीश की शपथ लेने जा रहे जस्टिस संजीव खन्ना ने मॉर्निंग वॉक छोड़ दी है। दरअसल, जस्टिस खन्ना को सिक्योरिटी के साथ मॉर्निंग वॉक पर जाने की सलाह दी गई थी, लेकिन जस्टिस खन्ना ने इससे इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि सिक्योरिटी की आदत नहीं है। जस्टिस खन्ना सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ के रिटायरमेंट के बाद जस्टिस संजीव खन्ना भारत के 51वें चीफ जस्टिस होंगे। वह 11 नवंबर को भारत के मुख्य न्यायाधीश की शपथ लेंगे। जस्टिस खन्ना दिल्ली में हर सुबह लोधी गार्डन एरिया और अपने घर के आसपास कई किलोमीटर तक अकेले टहलते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि कोई उन्हें

पहचान नहीं पाएगा। हालांकि, अब उन्होंने बाहर मॉर्निंग वॉक बंद कर दी है। रिपोर्ट के अनुसार, जस्टिस खन्ना ने राजधानी दिल्ली से ही पढ़ाई-लिखाई की है। उन्होंने अपनी स्कूलिंग मॉर्डन स्कूल से की और फिर सेंट स्टीफन कॉलेज से ग्रैजुएशन व दिल्ली यूनिवर्सिटी से लॉ डिग्री ली। सूत्रों के अनुसार, जस्टिस खन्ना अब भी स्कूल, कॉलेज के दोस्तों से कनेक्टेड हैं और मुलाकात करते रहते हैं। उनके दास्तों का भी मानना है कि जस्टिस खन्ना स्कूल और कॉलेज के दिनों से अब तक बहुत ज्यादा चेंज नहीं हुए हैं। एक दोस्त ने कहा कि वह काफी सिंपल, शांत और कैमरे व पब्लिसिटी से दूर रहने वालों में हैं। वहीं, भारत के अगले प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना ने शुक्रवार को सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सराहना की और कहा कि उन्होंने शीर्ष अदालत को बेहतर बनाने के मिशन पर काम किया और इसे सभी के लिये सुलभ समावेशिता का अभयारण्य बनाने के अपने लक्ष्य का पीछा किया। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) द्वारा जस्टिस चंद्रचूड़ के लिए आयोजित विदाई समारोह में जस्टिस खन्ना ने भावनात्मक भाषण में कहा कि उनके पद से हटने से सुप्रीम कोर्ट में एक 'खालीपन' आ जाएगा।

जब तक बीजेपी है, अल्पसंख्यकों को नहीं मिलेगा आरक्षण:गृहमंत्री

झारखंड से अमित शाह ने राहुल गांधी को दी बड़ी चेतावनी

पलामू (एजेंसी)। झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी का धुंआधार चुनाव प्रचारी है। इस बीच गृह मंत्री अमित शाह ने भी पलामू में विशाल जनसभा को संबोधित किया और राहुल गांधी को चेतावनी दे डाली। उन्होंने कहा कि जब भारतीय जनता पार्टी है, इस देश में अल्पसंख्यक समुदाय को आरक्षण नहीं मिलेगा। उन्होंने कहा, कांग्रेस पार्टी आरक्षण की बात करती है। संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। हम कभी भी किसी धर्म विशेष को आरक्षण नहीं दे सकते। अमित शाह ने आगे कहा, महाराष्ट्र में उलेमाओं के एक समूह ने उन्हें (कांग्रेस को) ज्ञापन दिया कि मुसलमानों को 10 प्रतिशत आरक्षण दिया जाना चाहिए और कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हम इसमें आपकी मदद करेंगे। अमित शाह ने कहा, मैं झारखंड की जनता से पूछने आया हूं कि अगर मुसलमानों को 10 फीसदी आरक्षण मिलेगा तो किसका आरक्षण कम हो जायेगा। पिछड़े वर्ग,

दलित और आदिवासियों का आरक्षण कम कर दिया जाएगा। मैं यहां से राहुल गांधी को चेतावनी देना चाहता हूं। राहुल बाबा, आपके मन में जो भी साजिश हो, जब तक बीजेपी है, इस देश में अल्पसंख्यकों को आरक्षण नहीं मिलेगा।

जम्मू-कश्मीर में सेना को मिली बड़ी कामयाबी

- श्रीनगर ग्रेनेड हमला मामले में लश्कर के तीन आतंकी गिरफ्तार

श्रीनगर (एजेंसी)। श्रीनगर ग्रेनेड हमले मामले में सुरक्षाबलों ने कार्रवाई करते हुए शुक्रवार को आतंकी संगठन लश्कर के तीन आतंकी सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। रविवार को श्रीनगर में किए गए इस ग्रेनेड हमले के निशाने पर सुरक्षाबल ही थे। इस हमले में 12 स्थानीय निवासी घायल हो गए थे। न्यूज एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक पुलिस अधिकारी वीके बर्डी ने बताया कि

गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान उसामा यासीन शेख, उमर फैयाज शेख और अफनान मंसूर शेख के रूप में की गई है। तीनों शहर के इखराजपोरा इलाके के रहने वाले हैं। बर्डी ने बताया कि तीनों आतंकियों की गिरफ्तारी के साथ ही ग्रेनेड हमले के इस मामले को सुलझा लिया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टेनिस खिलाड़ियों को किया पुरस्कृत

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को इंदौर टेनिस क्लब में आयोजित आईटीएफ एमटी 700 वर्ल्ड टेनिस पुरस्कार वितरण समारोह में शामिल हुए। उन्होंने विजेता टेनिस खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरित किये और शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, श्री गौरव रणदीवे सहित अन्य जनप्रतिनिधि, मध्यप्रदेश टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री अनिल महाजन, मध्यप्रदेश टेनिस एसोसिएशन के सचिव श्री अनिल धुपर एवं बड़ी संख्या में खिलाड़ी मौजूद थे।

पाकिस्तान के क्वेटा में जोरदार धमाका, 21 की मौत

चारों तरफ बिखरी लाशें, सुसाइड अटैक की आशंका

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से एक दर्दनाक खबर सामने आई है, जहां के क्वेटा रेलवे स्टेशन में एक बड़ा धमाका हुआ है, जिसकी चपेट में आने से अब तक 21 लोगों की मौत की खबर है। वहीं कई लोग इस धमाके की चपेट में आने के चलते बुरी तरह घायल भी हुआ है। आशंका है कि मरने वालों का आंकड़ा और भी बढ़ सकता है। रेलवे स्टेशन में हुए इस भयानक ब्लास्ट को लेकर क्वेटा के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एसएसपी मोहम्मद बलूच ने कहा है कि इस घटना में 16 लोगों की मौत हुई है और 30 घायल है। हालांकि दावा यह है कि अब तक 24 लोग मारे जा चुके हैं और घायलों की संख्या 50 तक भी पहुंच सकती है। पाकिस्तानी न्यूज चैनल जियो न्यूज के मुताबिक, यह धमाका तब हुआ, जब जाफर एक्सप्रेस ट्रेन रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर पहुंच रही थी और उसे कुछ ही देर में रवाना होना था। ऐसे में स्टेशन के काउंटर के पास टिकटों को लेकर भारी भीड़ थी। इसके चलते हुए धमाके में हताहत होने वालों की संख्या काफी ज्यादा है। पुलिस ने इसे एक आत्मघाती हमला बताया है और इस हमले की जिम्मेदारी बलूच लिबरेशन आर्मी ने ली है। पुलिस अधिकारी बलूच ने कहा है कि स्टेशन पर काउंटर के पास भारी भीड़ थी, जिसके चलते मरने और घायल होने वालों का आंकड़ा बढ़ सकता है। प्रांतीय सरकार के प्रवक्ता शाहिद रिंद के अनुसार बचाव और कानून प्रवर्तन दल तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और इलाके को सुरक्षित कर लिया। घायलों और मृतकों को क्वेटा के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि अस्पताल में आपातकाल घोषित कर दिया गया है, जहां घायलों के इलाज के लिए व्यवस्था की गई है।

झूठ बोलना बंद करो, कभी भी नहीं मिलेगा कश्मीर

यूएन के मंच से सुधांशु त्रिवेदी ने पाकिस्तान की लगाई क्लास

जिनेवा (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र में शांति रक्षा अभियानों पर बहस के दौरान पाकिस्तान द्वारा जम्मू कश्मीर का जिक्र किए जाने पर भारत ने पड़ोसी देश पर झूठ फैलाने का आरोप लगाते हुए उसकी आलोचना की। राज्यसभा सदस्य और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, ''भारत ने पाकिस्तान द्वारा की गई टिप्पणियों पर जवाब देने के अपने अधिकार को चुना है, जिसने एक बार फिर इस प्रतिष्ठित निकाय को अपने एजेंडे से भटकाने का प्रयास किया है।'' उन्होंने शुक्रवार को यहां संयुक्त राष्ट्र महासभा की विशेष राजनीतिक एवं वि-उपनिवेशी करण (चौथी समिति) में शांति रक्षा अभियानों पर चर्चा के दौरान ये टिप्पणियां कीं। सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर ''भारत का अभिन्न अंग था, है, और हमेशा रहेगा।'' उन्होंने कहा, हाल में वहां चुनाव हुए हैं।

अपनी सैन्य ताकत के प्रदर्शन को लेकर आक्रामक हुआ ड्रैगन

बीजिंग (एजेंसी)। चीन अपनी सैन्य ताकत के प्रदर्शन को लेकर अब और आक्रामक नजर आ रहा है। 12 नवंबर से शुरू होने वाले झुहाई के 15वें एयरोस्पेस शो में चीन अपनी नई वायु रक्षा प्रणाली एचक्यू-19 को दुनिया के सामने पेश करेगा। इसे अमेरिका के थाड और रूस के एस-400 जैसी उन्नत रक्षा प्रणालियों के बराबर बताया जा रहा है। इस आधुनिक प्रणाली की क्षमता ने अमेरिका और भारत जैसे देशों की चिंता बढ़ा दी है। चीनी सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स के अनुसार, एचक्यू-19 में बहु-स्तरीय हमलों को रोकने की ताकत है, जो युद्ध के हालात में इसे बेहद प्रभावी बना सकती है।

अगहन पंचमी से रामलला के लिए होगी खास व्यवस्था

अब ओढ़ाई ओढ़ाने के साथ ही भोग में भी होगा बदलाव

अयोध्या (एजेंसी)। श्रीराम लला को अगहन की पंचमी (20 नवम्बर) से रजाई ओढ़ाई जाएगी, तभी से गुनगुने जल से स्नान भी प्रारम्भ होगा और भोग में से ठंडी चीजें हटाई जाएंगी। यह जानकारी श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास महाराज ने दी। आचार्य सत्येंद्र दास बीते कुछ दिनों से लखनऊ पीजीआई में स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। अब वह स्वस्थ होकर अयोध्या आ गए हैं। मुख्य अर्चक ने बताया कि सर्दी बढ़ने के साथ-साथ जैसे हम लोगों के खान-पान, पहनावे में धीरे-धीरे परिवर्तन होता है, वैसे प्रभु राम लला के भोग और वस्त्रों में बदलाव होता है। आमतौर पर अगहन की पंचमी से श्री विग्रह को रजाई ओढ़ाई जाती है, तभी से प्रभु को स्नान कराने के लिए गुनगुने पानी का उपयोग किया जाता है। इसी अनुसार भोग में सर्द चीजें हटाकर गरमी पहुंचाने वाला भोग तैयार किया जाता है। अधिक ठंड बढ़ने पर ब्लोअर भी लगाया जाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर से गैस सिलेंडर रिफिल के लिए 26 लाख बहनों के खातों में 55 करोड रुपए अंतरित किए।

सिवनी में बाइक-कंटेनर की भिड़ंत ,एक की मौत,

सिवनी (नप्र)। जिले के लखनादौन अंतर्गत राष्ट्रीय राज्य मार्ग 44 गणेशगंज के पास शनिवार दोपहर कंटेनर और बाइक की टक्कर हो गई। हादसे में बाइक सवार व्यक्ति की घटना स्थल पर मौत हो गई। वहीं एक व्यक्ति घायल है। जिसे इलाज के लिए सिविल अस्पताल लाया गया है।हादसे में उरद लाल पिता जमार उइके (30) निवासी ग्राम अका लमा की जान चली गई है। वहीं राम चंद पिता रतिलाल भलावी (25) निवासी बिजना घायल है।

आईसीयू में पति के सामने पत्नी की बॉडी डोनेट

ब्रेनडेड पत्नी को मांग भरकर विदा किया; किडनी और आंखें दान

इंदौर/शाजापुर (एजेंसी)। एक महिला के ब्रेन डेड होने के बाद उसकी दोनों किडनी और आंखें दान की गईं। इसके लिए इंदौर में शुक्रवार शाम को दो ग्रीन कॉरिडोर बनाए गए। दोनों किडनी अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती मरीजों को ट्रांसप्लांट की गई। यह इंदौर में बनाया गया 58वां ग्रीन कॉरिडोर था। यह अंगदान रुला देने वाला रहा। दरअसल पति-पत्नी भाई दूज पर एक हादसे में घायल हो गए थे और हॉस्पिटल में पास-पास ही एडमिट थे। शुक्रवार को पति ने ब्रेन डेड पत्नी की किडनी और आंखें डोनेट करने की इच्छा जताई। साथ ही हॉस्पिटल में ही उसकी मांग पर सिंदूर भरकर आखिरी विदाई दी। यह दृश्य देखकर हर किसी की आंखें डबडबा गईं।

एक्सीडेंट में घायल हुई महिला, बाद में हुआ ब्रेन डेड- जिस महिला के अंगदान किए गए, उनका नाम मनीषा पति भूपेंद्र राठौर (44), निवासी शाजापुर है। 3 नवंबर को भाई दूज के दिन वे अपने पति के साथ इंदौर में रहने वाली ननद के यहां आईं थी। लौटते समय मक्सी रोड पर हुए हादसे में मनीषा गंभीर रूप से घायल हो गई थीं, जिसके बाद उन्हें सीएचएल अस्पताल में भर्ती किया गया। यहां हालत बिगड़ती गई और 6 नवंबर को उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया। इसके बाद डॉक्टरों की टीम ने 7 नवंबर को उन्हें विधिवत ब्रेन डेड घोषित किया।

एक किडनी 5 मिनट तो दूसरी 7 मिनट में पहुंचाई गई- ऑर्गन्स को-आर्डिनेटर जीतू बगानी और संदीपन आर्य ने बताया कि अंगदान का हर मामला चुनौतीपूर्ण होता है। इस मामले में 72 घंटे की कोशिश के बाद यह अंगदान हो पाया। इसमें सीएचएल हॉस्पिटल के सीईओ मनीष गुप्ता, डॉ. निखिलेश जैन और कोऑर्डिनेटर मनीषा बगानी ने परिजन की सहमति के बाद प्राथमिकता के आधार पर तैयारियां शुरू की। पहला ग्रीन कॉरिडोर सीएचएल हॉस्पिटल से राजश्री अपोलो हॉस्पिटल तक बना। शुक्रवार शाम 6.45 बजे एम्बुलेंस से किडनी भेजी गई जो अपोलो राजश्री हॉस्पिटल में 6.52 बजे पहुंच गई। दूसरा कॉरिडोर भी 6.45 बजे सीएचएल हॉस्पिटल से बना और किडनी 6.50 बजे एमिनेंट हॉस्पिटल पहुंचा दी गई और ट्रांसप्लांट शुरू हो गया।

अंगदान जागरूकता के पोस्टर्स लगे, रथ में शवयात्रा

शाजापुर में परिवार और समाज के लोग मनीषा के अंगदान से इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने शाजापुर में कई जगहों पर अंगदान जागरूकता के पोस्टर्स लगाए हैं और लोगों से अपील की है कि वे भी अंगदान के लिए आगे आएं। इसके साथ ही मनीषा की अंतिम यात्रा रथ में निकाली गई। यह यात्रा आदर्श कॉलोनी से शुरू हुई जो टंकी चौराहे होते हुए महुपुरा, सोमवारिया बाजार नई सड़क होते हुए श्मशान घाट पहुंचेगी।

इंदौर में प्राइवेट हॉस्पिटल करेंगे संजीवनी क्लीनिकों का संचालन

आठ बड़े हॉस्पिटल्स ने दी 28 क्लिनिकों के लिए सहमति, बेहतर इलाज होगा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में संजीवनी क्लीनिकों का संचालन प्राइवेट हॉस्पिटल्स के सहयोग से किया जाएगा। इसके लिए शुरुआती दौर में 28 संजीवनी क्लीनिकों के संचालन के लिए शहर के आठ बड़े हॉस्पिटल्स ने सहमति दे दी है। इनके माध्यम से संजीवनी क्लिनिक में बेहतर सेवाएं मिलेंगी। इंदौर के संजीवनी क्लीनिकों का संचालन निजी क्षेत्र के प्रतिष्ठित चिकित्सालयों के सहयोग किया जाएगा। कलेक्टर आशीष सिंह ने शुक्रवार को संजीवनी क्लीनिकों के बेहतर संचालन के संबंध में प्राइवेट हॉस्पिटल संचालकों की बैठक ली।

बैठक में उन्होंने आग्रह किया कि इंदौर में संचालित संजीवनी क्लीनिकों के बेहतर संचालन के संबंध में राज्य शासन के निर्धारित मापदंड के अनुसार सहयोग प्रदान करें। बैठक में अपर कलेक्टर गौरव बेनल सहित इंदौर में रजिस्टर्ड 100 बिस्तर से अधिक क्षमता वाले समस्त अस्पताल, मेडिकल कालेज के संचालक, प्रबंधक उपस्थित थे। बैठक में विशेष रूप से अरविंदो मेडिकल कॉलेज, इंडेक्स मेडिकल कॉलेज, एलएनसीटी मेडिकल कॉलेज, बॉम्बे हॉस्पिटल, चोइथराम , मेदांता हॉस्पिटल, केयर सीएचएल , विशेष जूपिटर हॉस्पिटल शामिल हुए। कलेक्टर ने सभी को संजीवनी क्लीनिक के संबंध में जानकारी दी और आग्रह किया कि आमजन की सुविधा को देखते हुए सहयोग देते हुए इनका संचालन अपने हाथों में लें। इस संबंध में संजीवनी क्लीनिक को निजी अस्पतालों द्वारा शासन स्तर से दिए गए मागदर्शन अनुसार संचालित करने के लिए जानकारी प्रदान की गई। इंडेक्स मेडिकल कॉलेज द्वारा 10 संजीवनी क्लिनिक, अरविंदो मेडिकल कॉलेज द्वारा 6 संजीवनी क्लिनिक, सेवाकुंज हॉस्पिटल एवं एलएनसीटी मेडिकल कॉलेज द्वारा 4-4, बॉम्बे हॉस्पिटल, शैलबी हॉस्पिटल, चोइथराम नेत्रालय, केयर सीएचएल द्वारा 1-1 संजीवनी क्लिनिक का संचालन करने के लिए सहमति दी गई।

जीएसटी पोर्टल पर व्यापारियों के लिए नया ऑप्शन

अब इनपुट इनवॉइस एक्सेप्ट-रिजेक्ट, होल्ड के विकल्प भी; 14 नवंबर से रिटर्न भरने तक रहेगा प्रभावी

इंदौर (एजेंसी)। जीएसटी काउंसिल की अनुशंसा पर जीएसटी एक्ट में परिवर्तन करके सरकार द्वारा 1 नवंबर से जीएसटी के कुछ प्रावधानों में बदलाव किए गए हैं। इसके साथ ही इनपुट टैक्स क्रेडिट लेने के लिए पोर्टल में इनवॉइस मैनेजमेंट सिस्टम के तहत एक नई व्यवस्था लागू की गई है। इन सभी परिवर्तनों पर चर्चा के लिए टैक्स प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन एवं सीए इंदौर शाखा द्वारा संयुक्त रूप से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सीए उमेश गोयल ने बताया कि सरकार द्वारा करदाताओं को वर्ष 2017-18 से 2019-20 तक धारा 73 के अंतर्गत की गई कर की मांग पर जीएसटी कानून में नई धारा 128 का समावेश करके इस पर ब्याज एवं पेनल्टी से छूट प्रदान की गई है। इसके लिए पोर्टल पर फॉर्म भरकर 31 मार्च 2025 तक टैक्स का भुगतान कर यह छूट प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार, वर्ष 2017-18 से 2020-21 तक इनपुट टैक्स क्रेडिट देरी से लेने पर उसे अमान्य करके डिमांड जारी की गई थी। अब उसे मान्य करने के लिए एक नई धारा 16(5) एवं 16(6) को अधिसूचित किया गया है। करदाता द्वारा एक फॉर्म में इसकी पूरी जानकारी देने पर अधिकारी उसकी जांच करके उस मांग को समाप्त करने का आदेश जारी कर सकते हैं।

नए सिस्टम के तहत हर बिल का मिलान करना होगा- सीए यश खंडेलवाल ने बताया कि जीएसटी के अंतर्गत शुरुआत में ही इनपुट क्रेडिट के बिल का मिलान करके उसकी क्रेडिट लेने के प्रावधान लाए गए थे, लेकिन तकनीकी कारणों से इसे तब लागू नहीं किया जा सका। अब 7 साल बाद इनवॉइस मैनेजमेंट सिस्टम लाया गया है। पहले क्रेडिट की कुल राशि से मिलान किया जाता था, लेकिन अब हर बिल का मिलान करना होगा। इस नए सिस्टम के तहत करदाता को फॉर्म 2बी में दिख रही क्रेडिट को स्वीकार, अस्वीकृत या होल्ड पर रखने के विकल्प में से किसी का चुनाव करना अनिवार्य होगा। इसी पर क्रेडिट प्राप्त होगी और रिटर्न फाइल हो सकेगा।

एक धारा के तहत होगी कार्रवाई, पहले दो धाराएं थी- सीए कृष्ण गर्ग ने कहा कि अभी तक किसी भी प्रकार की मांग के लिए कर चोरी करने पर धारा 74 और अन्य दशाओं में धारा 73 के तहत कार्यवाही की जाती थी। इन दोनों धाराओं के लिए कार्यवाही की समय सीमा भी अलग थी, लेकिन 1 नवंबर से लागू अधिसूचना के बाद अब दोनों स्थितियों को मिलाकर एक नई धारा 74ए लाई गई है। इसके अनुसार, संबंधित वर्ष की वार्षिक विवरणी फाइल करने की अंतिम तिथि से 42 माह के भीतर ही नोटिस जारी किया जा सकेगा। इसका प्रभाव यह हुआ है कि धारा 73 के अंतर्गत यह समय सीमा 33 माह से बढ़कर 42 माह और धारा 74 के अंतर्गत 54 माह से घटकर 42 माह हो गई है।

सेल्फ इनवॉइस बनाना अनिवार्य, नहीं तो लगेगी पेनाल्टी

सीए सुनील पी जैन ने कहा कि रिवर्स चार्ज के अंतर्गत सरकार द्वारा अब सेवाओं या माल की प्राप्ति के 30 दिन के भीतर सेल्फ इनवॉइस बनाना अनिवार्य कर दिया गया है। इसका पालन न करने पर विभाग पेनाल्टी लगा सकता है। टैक्स प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सीए जेपी सराफ ने वर्ष 2023-24 के किसी भी व्यवहार में संशोधन या इस वर्ष से संबंधित क्रेडिट लेने की अंतिम तिथि 30 नवंबर होने के कारण अक्टूबर महीने का रिटर्न सावधानीपूर्वक भरने की सलाह दी है। कार्यक्रम में सीए सुनील खंडेलवाल, गोविंद गोयल, एसएन गोयल, दीपक माहेश्वरी, पलकेश असावा सहित बड़ी संख्या में चार्टर्ड अकाउंटेंट, एडवोकेट तथा कर सलाहकार उपस्थित थे।

सिरपुर रामसर साइट के पास से हटाए अवैध कब्जे, लोगों ने किया हंगामा

खिजरा पार्क के पास भी सख्ती से चला बुलडोजर

इंदौर (एजेंसी)। शनिवार को नगर निगम ने सिरपुर तालाब रामसर साइट के पास अवैध कब्जे हटाने की कार्यवाही शुरू की है। इस दौरान रहवासियों ने हंगामा किया और अमले के साथ झूमाझटकी भी की। पुलिस की सख्ती के आगे किसी की नहीं चली और 10 से ज्यादा अवैध कब्जे हटाए गए। दरअसल यहां फिर से कब्जे होना शुरू हो गए थे जबकि सिरपुर तालाब को रामसर साइट घोषित किया गया है। इसके बावजूद सरकारी जमीन पर कब्जे होने लगे थे। शनिवार रिमूवल टीम ने सड़क और तालाब कैचमेंट एरिया के बीच बनी गुमटियों को हटाया। हंगामे की स्थिति के मद्देनजर निगम के सीनियर अधिकारी पुलिस बल के साथ में थे। शुरू में लोगों ने हंगामा किया लेकिन जब सख्ती की तो पीछे हटना पड़ा। इस दौरान खिजरापार्क अवैध कॉलोनी के पास के भी 6 अवैध निर्माण हटाए गए, इसके साथ ही 16 बाउण्ड्रीवाल को ढहाया गया।

इंदौर में छात्रा से छेड़छाड़, उसके भाई से मारपीट

बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने थाने का किया घेराव; पार्षद पुत्र उमेर खान पर एफआईआर

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक युवती से छेड़छाड़ करने पर मुंह बोले भाई ने विरोध किया तो आरोपी ने उसके साथ मारपीट की। शिकायत पर पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोपी पक्ष का कहना है कि लेन-देन के विवाद में बिना वजह माहौल बनाया गया है। भंवरकुआं थाना पुलिस के मुताबिक, द किंग ट्रायंगल कैफे में तीन इमली निवासी एक छात्रा कॉफी पीने पहुंची थी। उस दौरान आरोपी उमेर आया और छात्रा से छेड़छाड़ करने लगा। उसने बुरी नीयत से छात्रा का हाथ पकड़ लिया। छात्रा द्वारा विरोध करने पर भी वह नहीं माना। यह देख छात्रा के मुंह बोले भाई ने विरोध किया तो उमेर ने उसे जबरदस्ती कार में बैठाया और साथ ले गया। रास्ते में उसके साथ मारपीट की और धमका कर चला गया। बाद में युवक छात्रा के साथ आरोपी उमेर खान पर केस दर्ज करवाने भंवरकुआं थाना पहुंचा। सूचना पर बजरंग दल के कार्यकर्ता भी थाने पहुंचे और घेराव किया। पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ के केस दर्ज किया है। आरोपी युवक पार्षद पुत्रा है। वहीं मामले में दूसरे पक्ष का कहना है कि, लेन-देन के विवाद में बिना वजह माहौल बनाया गया है। दबाव बनाकर झूठा केस दर्ज करवाया गया है।

इंदौर में स्कूल बस ने गाय को टक्कर मारी

शिकायत पर पुलिस ने बस चालक पर केस दर्ज किया; महिला-पुरुष चुराए प्रोटीन के डिब्बे

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में गाय को स्कूल बस के द्वारा टक्कर मारने का मामला सामने आया है। पुलिस ने शिकायत पर बस चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है। बेटमा थाना पुलिस के अनुसार फरियादी लोकेश हरियाल उम्र 25 साल निवासी ग्राम बगौदा की शिकायत पर एसके इंटरनेशनल स्कूल की बस के चालक रामलाल के खिलाफ केस दर्ज किया है। घटना पंडितजी की होटल के सामने विशाल चौराहा की है। स्कूल बस का चालक बस को लापरवाही पूर्वक चलाकर लाया और फरियादी की गाय को टक्कर मार दी। गाय के दाहिने तरफ पेट व पैर में चोट लगी है।

महिला-पुरुष प्रोटीन के डिब्बे चुराकर ले गए- वहीं इंदौर के लसूड़िया थाना क्षेत्र के सेक्टर (ऋ) महालक्ष्मी नगर स्थित एक दुकान से महिला- पुरुष प्रोटीन के डिब्बे चुराकर फरार हो गए। लसूड़िया पुलिस के अनुसार अभिषेक पिता मुकेश मेहरा (24) निवासी पीसी सेठी नगर की शिकायत पर अज्ञात महिला और उसके साथी पर केस दर्ज किया हैं।

इंदौर में रात 3 बजे तक चली काउंटिंग

गुरुसिंघ सभा चुनाव में सभी 19 पदों पर खालसा पैनल के प्रत्याशी विजयी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में सिख समाज की संस्था गुरु सिंघ सभा के चुनाव में कार्यकारिणी के 17 पदों के नतीजे शुक्रवार रात 3 बजे घोषित हुए। चुनाव में अध्यक्ष, महासचिव सहित 19 पदों के लिए चुनाव हुए। खास बात यह कि सभी पदों पर खालसा पैनल के प्रत्याशी विजयी हुए हैं। समाज में बीते 40 सालों में यह पहला मामला है जब एक पैनल के सारे प्रत्याशी जीते हैं। चुनाव अधिकारी हरप्रीतसिंह बख्शी ने बताया कि कार्यकारिणी के 17 पदों के लिए 34 प्रत्याशी मैदान में थे। देर रात तक काउंटिंग चली और रात 3 बजे परिणाम घोषित हुए। शुक्रवार दोपहर अध्यक्ष पद पर खालसा पैनल के हरपाल सिंह मोनू और महासचिव पद पर प्रीतपाल सिंह चुनाव जीते थे। कार्यकारिणी के सारे प्रत्याशी भी इसी पैनल से जीते हैं जबकि खंडा पैनल का खाते में एक भी जीत दर्ज नहीं हुई।

दो पैनल से 38 उम्मीदवार थे आमने-सामने- 12 साल बाद हुए मतदान में अध्यक्ष, महासचिव सहित 17 सदस्यों के चुनाव के लिए खालसा-फतेह पैनल और खंडा पैनल से 38 उम्मीदवार आमने-सामने हैं। यह चुनाव कलेक्टर की निगरानी में हो रहा है। इस बार 11687 सदस्यों को मतदान करना था। इनमें से गुरु अमरदास हॉल में 3500 मतदाताओं ने, खालसा कॉलेज में 1521, निरंजन पुर गुरुद्वारा में 1305 और गुरु हरे कृष्णा पब्लिक स्कूल में 1100 मतदाताओं ने मतदान किया।

इंदौर में शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने वाला गिरफ्तार

इंस्टाग्राम पर हुई थी युवती से दोस्ती, खुद को बताया था पुलिसकर्मी

इंदौर (एजेंसी)। डकाच्या निवासी दुकानदार ने इंस्टाग्राम पर खुद को सब इंस्पेक्टर बताकर युवती से दोस्ती की। पांच साल संपर्क में रहा और शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करता रहा। युवती को असलियत पता चली तो धमकाने लगा। पुलिस ने युवती की शिकायत पर रेप का केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

मल्हारगंज टीआई शिव रघुवंशी के अनुसार 30 वर्षीय महिला ने शिकायत की थी कि 2019 में उसकी इंस्टाग्राम के जरिए दीपक पटेल से दोस्ती हुई थी। दीपक इंदौर के ग्रामीण क्षेत्र डकाच्या का निवासी है। इंस्टाग्राम के जरिए दोनों की पहचान हुई। पहचान दोस्ती में बदली और आगे दोनों के बीच प्रेम प्रसंग हुआ। पीड़ित महिला का आरोप है कि आरोपी ने शादी का झांसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरोपी युवक ने खुद को पुलिस अधिकारी बताया था। वर्दी में फोटो भेजी थी। पुलिस इसकी जांच कर रही है। पुष्टि होने पर वैधानिक कार्यवाही की जाएगी।

वीडियो वायरल की धमकी

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरोपी ने सब इंस्पेक्टर की वर्दी पहना फोटो लगा रखा था। उसने खुद का परिचय देते हुए कहा था वह सब इंस्पेक्टर है। उसके एसआई होने से प्रभावित हुई और साथ घूमने-फिरने लगी। एक साल बाद युवती ने कहा माता-पिता से शादी की बात कर लो। तब वह अपशब्द कहने लगा। इसके बाद 1 साल तक हमारे बीच बात नहीं हुई। मेरे जन्मदिन वाले दिन उसने मेरी बहन को कॉल कर कहा कि तुम्हारी बहन से कहो मुझसे बात करे। दीपक से बात हुई तो बोला तुमने मुलाकात नहीं की तो तुम्हारे निजी फोटो-वीडियो वायरल कर दूंगा। डर कर उससे मिलने लगी और उसका कहा मानने लगी।

पुलिस की स्टाइल में बात करता था आरोपी

दीपक युवती को कभी पुलिस कंट्रोल रूम तो कभी अजाक थाने के पास मिलने बुलाता था और पुलिसिया स्टाइल में बात करता था। एक दिन पता चला दीपक पुलिस में नहीं है तो मेरे परिचित उसे पकड़कर थाने ले गए। आरोपी का कहना है उसका जीजा पुलिस में है, उनकी गैर मौजूदगी में वर्दी पहनकर फोटो खिंचवा लिए थे। आगे की जांच की जा रही है।

भारतीयों के नाक की चमड़ी मोटी और बनावट अलग होती है

सब देशों से अलग, इंदौर के डॉक्टर ने की रिसर्च

इंदौर (एजेंसी)। भारतीयों की नाक बाकी देशों के लोगों से अलग रहती है। विदेशों में नाक की सर्जरी की जो टेक्निक, है वह भारतीयों के लिए नहीं है। इसका कारण है कि भारतीयों की नाक की चमड़ी मोटी और बनावट अलग होती है। यह कहना है डॉ. ब्रजेंद्र बसेर (नोज सर्जन) का। वे एमजीएम मेडिकल कॉलेज से 1974 बैच के छात्र रहे हैं। शुक्रवार को कॉलेज में आयोजित रीयूनियन गोल्डन जुबली कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। वे इन दिनों अरबिंदो हॉस्पिटल में है। उन्होंने दिल्ली के एम्स में पढ़ाई की, कई साल विदेश में रहे और नाक की सर्जरी पर काफी रिसर्च किया है। उन्होंने मीडिया को बताया कि इंडियन नोज को लेकर भारत में पहले जानकारी बहुत कम थी। कई रिसर्च में पता चला कि भारतीयों की नाक बाकी देशों के लोगों से अलग रहती है। प्लास्टिक सर्जरी की टेक्निक सुंदरता और नाक बढ़ाने की रहती है। दरअसल भारतीयों की चमड़ी मोटी होने के कारण सांस लेने की प्रक्रिया कुछ अलग होती है; दरअसल नाक में मोटापन ज्यादा रहता है। भारतीयों में नाक के अंदर का हिस्सा कमजोर होता है। विदेशियों की चमड़ी पतली होने से नाक स्ट्रॉन्ग होती है।

मूल स्वरूप को ढंक लेती है भारतीयों की मोटी स्किन

डॉ. बसेर का अनुभव यह है कि भारतीयों की मोटी स्किन नाक के मूल स्वरूप को ढंक लेती है। विदेशों की सर्जरी की जो टेक्निक है वह भारतीयों के लिए सही नहीं है। इसका पता विदेशों में चला जहां कई भारतीय बसे हैं। नाक की सर्जरी की जरूरत टेढ़ी नाक के कारण होती है क्योंकि वे ठीक से सांस नहीं ले पाते। स्किन मोटी होने से भी सांस लेने में बहुत परेशानी होती है। नाक को फंगशनल होना जरूरी है।

1980 में पहली बार तैयार किया मॉड्यूल- उन्होंने 1980 के दशक में नाक के लिए पहली बार मॉड्यूल डेवलप किया, उसके बाद स्पेशल टेक्निक डेवलप की। इसके साथ ही भारतीयों की नाक की बनावट और सर्जरी को लेकर चार किताबें लिखी। इसके अलावा 20 प्रदेशों में लाइव सर्जरी की और डॉक्टरों को ट्रेनिंग दी। डॉ. बसेर का कहना है अब तो सेल्फी, सोशल मीडिया के जमाने में नाक की प्लास्टिक सर्जरी की डिमांड और बढ़ गई है।

सुनार की तरह बारीकी से बनानी पड़ती है नाक- बकौल डॉ. बसेर अब एस्थेटिक सर्जरी का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। महिलाएं कितनी भी कीमती हार पहन ले लेकिन अगर नाक टेढ़ी है तो लोग पहले नाक की ओर देखेंगे। नाक की सर्जरी अभी दुनिया में सबसे कॉमन प्लास्टिक सर्जरी से होती है। भारत में अब इसका रेफरेंस आ गया है तो लोग खासकर सेलिब्रिटी सुंदरता के लिए नाक की सर्जरी करवाते हैं।

पुस्तक समीक्षा

व्याप्ति उमड़ेकर
(साहित्यकार एवं समीक्षक)

शीर्षक को सार्थक करती 'सार्विक'

इस पुस्तक के लेख पाठक को उन ऐतिहासिक कहानियों से परिचित कराते हैं, जिनकी शिलाएं दृष्टव्य होकर भी कहानियां अदृश्य सी प्रतीत होती हैं। वहीं दूसरी ओर वे आपको परिचित कराते हैं संगीत जगत से, आवाज की दुनिया से, विवादित इतिहास से, सामाजिक विद्रूपता से और सामयिक समस्याओं, समकालीन प्रश्नों से लेकर व्यावहारिक ज्ञान बोध तक।

किं तने अनुभवों की स्मृतियां,
ये किशोर मुंह जोहते हैं सुनने को।
मुझे बताना चाहिए वह सब,
जो मैंने जीवन में देखा समझा ॥

ये पंक्तियों बेहद सटीक बैठती है शोधपरक आलेख संग्रह 'सार्विक' के रचनाकार दिनेश पाठक पर। तीन दशक से अधिक के रचनात्मक अनुभव को चयनित आलेखों के माध्यम से उन्होंने मिठाई के पचरंगी डिब्बे की तरह सजाया है, ताकि विविध स्वादिक मनोवृति वाले पाठकों को अपनी रुचि के अनुरूप पुस्तक में कुछ न कुछ ऐसा अवश्य मिले जो ज्ञान का संवर्धन कर मेधा को आलोकित करे। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के सहयोग से बोधी प्रकाशन जयपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'सार्विक' में विविध विषयक शोधपरक आलेख हैं। जिनकी सहज, सुगम, प्रभावी भाषा शैली लेखों में निहित कथ्य को पाठकों के समक्ष रोचकता से रखती है।

पुस्तक का प्रथम लेख 'हरि कथा अनंता' जहाँ विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह को मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की परंपरा और भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति के प्रतीक के तौर पर दर्शाती है। वहीं खानदानी संगीत परंपराओं में खून और दूध की तालीम के चलते, पैतृक परंपरा के अभाव में भी किस प्रकार कई संगीतज्ञों ने संगीत के क्षेत्र में नाम अर्जित किया यह बताता है लेख 'बपौती नही थी, बंदिशों पर उनकी।' संगीत सम्राट तानसेन के व्यक्तित्व के अप्रचलित आयाम से परिचित कराता लेख है 'काव्य शिरोमणि तानसेन।'

ग्वालियर के किले पर संगीत और कलाओं के प्रश्रयदाता राजा मानसिंह तोमर का महल मान मंदिर, किले के शीर्ष पर होने के बावजूद उन्होंने अपनी प्रेयसी संगीत प्रिय गुजरी रानी मृगनयनी के लिए गूजरी महल का निर्माण किले के निचले छोर पर क्यों कराया? यह जिज्ञासा हर पर्यटन के मन में उपजती है, जिसका समाधान करने वाला लेख है 'दूसरा ताजमहल।'

लेखक के स्वयं तीन दशक तक प्रसारण जगत से जुड़े रहने के कारण इस संग्रह में रेडियो प्रसारण पर तीन जानकारीपरक लेख भी सम्मिलित हैं। पहला, राजधानी दिल्ली में कड़कती ठंड में गणतंत्र दिवस समारोह के समय ऑन द स्पॉट कमेंट्री कितने जतन से प्रसारित की जाती है यह 'जन गण का मन' लेख के माध्यम से जाना जा सकता है। वहीं दूसरा लेख 'लोक सेवा प्रसारण को समर्पित एक दिवस लोकसेवा प्रसारक के रूप में आकाशवाणी के महत्व पर प्रकाश डालता है। रेडियो प्रसारण पर तीसरा लेख 'बदल गई दुनिया आवाज़ की' समय के साथ रेडियो प्रसारण के क्षेत्र में आए बदलावों को रेखांकित करता है। साहित्यकार समाज का प्रतिबिंब होता है, जो कुछ भी उसके आसपास घटित होता है,वही उसकी संवेदनशील लेखनी कागज़ पर उकेरती है। बैंड बाजा बारात से हम सभी भली भांति परिचित हैं। लेकिन, यह बात कम लोग ही जानते हैं कि चमचमाती ड्रेस पहने, यंत्रवत बाजा बजाने वाले साजिंदे फेफड़ों के कमज़ोर होने से अक्सर टीबी से पीड़ित होने की व्यथा से दो चार होते हैं। लेखक की संवेदनशील लेखनी 'बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना' लेख के माध्यम से इसे समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। वहीं दूसरी ओर एकल परिवार के बढ़ते चलन से, समाज में बुजुर्गों के एकाकीपन पर भी चिंता व्यक्त करता हुआ लेख 'तन्हाई की तकलीफ' है।

समाज में सोशल मीडिया के अत्यधिक चलन से उपजे मानसिक संत्रास को उकेरता है लेख 'आभासी दुनिया का अवसाद।' क्या गांधी और नेहरू आजाद और भगत सिंह को आतंकवादी मानते थे? जैसा शोध पूर्ण लेख भारत की स्वतंत्रता हेतु किए जाने विविध प्रयासों और उनके नायकों के मध्य वैचारिक टकराव का शोधात्मक विश्लेषण करता है। कोविड 19 के दौरान संपूर्ण देश में श्रमिक वर्ग का अपने मूल स्थान की ओर वापसी के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक प्रभावों के परिप्रेक्ष्य में आपदा को अवसर में बदलने के व्यावहारिक सुझावों और विश्लेषण पर आधारित है लेख, 'आ अब लौट चलें '।जहां मानो तो मैं गंगा माँ हूं लेख गंगा से भारतीय मनुष्य के भावनात्मक लगाव के बावजूद इसके दोहन और प्रदूषण के कारणों का विश्लेषण करता है वहीं 'अभिव्यक्ति की अराजकता' लेख वेब सीरीज और ओटीटी पर प्रसारित हो रही अनियंत्रित सामग्री की अश्लीलता और फूहड़ता पर सवाल उठता है। ज़िम्मेदार कौन, नाकाफी कानून या विकृत मानसिकता लेख बढ़ते यौन अपराधों के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों के आधार पर समस्या से निपटने के सुझावों को समाहित करता है। स्वातंत्र्य यज्ञ की आहुति जलियांवाला नरसंहार, इक मुसाफिर को दुनिया में क्या चाहिए?, क्यों सिमट रही है दुनिया पत्र पत्रिकाओं की?, किरदार बदल कर तो देखिए जैसे विचारोत्तेजक लेखों में तथ्यों के साथ ही रोचकता भी बरकरार है।

इस प्रकार कुल 48 लेखों में ऐतिहासिक, साहित्यिक,सम सामयिक व सामाजिक विषयों पर जानकारी के साथ ही सवाल उठाते एवं दिशा बोध कराते हुए लेख भी सम्मिलित हैं। पुस्तक के आशीर्वचन में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति प्रो. बलदेव भाई शर्मा लिखते हैं कि नौजवानों के लिए यह पुस्तक जानकारीपरक तो होगी ही, इसे पढ़कर वे सोचने की एक नई दिशा भी पा सकेंगे,यह विश्वास है। एक पत्रकार कितनी बहुआयामी दृष्टि रखता है और उसे विस्तार देकर पाठकों का हित संवर्धन करता है,लोक कल्याणकारी पत्रकारिता की यही पहचान है।उनका ये विचार बेहद सटीक एवं प्रासंगिक महसूस होता है।

यह आलेख संग्रह पठनीय है और पाठकों के सभी वर्गों के लिए इसमें कुछ न कुछ है, विशेष तौर पर युवावर्ग को इस पुस्तक से जानकारी प्राप्त होने के साथ ही दिशाबोध भी होगा कि गंभीर विषय पर रोचक तरीके से किस प्रकार लेखन किया जा सकता है , विषय चयन कैसे करना चाहिए आदि। सही मायने में ये पुस्तक आलेख संग्रह मात्र नहीं है अपितु मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करते हुए दृष्टव्य अपने शीर्षक 'सार्विक' को सार्थक सिद्ध करती है।

- पुस्तक- सार्विक
- पृष्ठ संख्या - 225
- लेखक- दिनेश पाठक
- प्रकाशक-बोधि प्रकाशन, जयपुर
- मूल्य- 300

(लघुकथा)

बोझ

सुरेश सौरभ

मंत्री जी को अपने कार्यालय में एकांत पाकर उनके पी.ए. ने कहा-'सर मेरे दिल पर एक बोझ है, आप से एक बात करना चाह रहा हूं, कहीं आप नाराज तो न होंगे?'

तुम मेरे पी.ए. हो, नाराजगी काहे की, कहो तो सही।सर आपने वहां कुम्हारों की सभा में कहा कि उन्हें अपनी माटी कला से हमेशा जुड़े रहना चाहिए। इसी में उन लोगों का मान सम्मान और स्वाभिमान है, पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला का वह विस्तार करें, जबकि आप उनकी माली दशा से पूरी तरह वाकिफ है, उन्हें मिट्टी के पट्टे के लिये कैसे परेशान होना पड़ता है, उन्हें अपने मिट्टी के बर्तन, खिलौने, दिये आदि बेचने के लिए स्थानीय प्रशासन से कैसे संघर्ष करना पड़ता है, यह सब बातें किसी से छिपी नहीं है। आपके बच्चे तो विदेशों में शिक्षा पाकर कहीं न कहीं सेटल हो ही जाएंगे, पर उन गरीब कुम्हारों का, उनके बच्चों का, क्या होगा? क्या वे अपने बच्चों का माटी कला से भविष्य को सुधार पाएंगे, संवार पाएंगे? मंत्री-तुम सही कह रहे हो भाई, पर हम करें तो क्या करें? सरकारी उपक्रम बिक रहे हैं। नौकरियां मिलने से रहीं और सरकार की आलोचना हम कर नहीं सकते? अब विकल्प यही बचा है कि गरीब अनपढ़ों को धार्मिक भावनाओं में डुबोते हुए, उन्हें भावनात्मक रूप से भटकाते हुए, बरगलाते हुए, बस किसी तरह अपनी सीट बचाते रहो। यह यथार्थ तुमसे छिपा नहीं है। पी.ए. निरुत्तर हो, माटी कला उत्थान मंत्रालय की फाइलें निपटाने लगा। उसके दिल पर रखा भारी बोझ अब उतर चुका था।

सैनिक का दर्द

सुरेश रायकवार

देश की सीमा पर तैनात सैनिक का साक्षात्कार लेने पहुंचे पत्रकार ने सैनिक को सैल्यूट कर प्रश्न किया ङ्क यहाँ जीवन के लिए प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों में आपको अपनी ड्यूटी देना कैसा लगता है?

यह तो मेरे लिए गर्व का विषय है, हर सैनिक का स्वप्न होता है कि उसकी तैनाती सीमा पर हो! - जवान ने एकदम सामान्य रहते हुए ही उत्तर दिया। मौसम की प्रतिकूलता का जैसे सैनिक पर कोई असर ही नहीं था।

आपको डर नहीं लगता? पत्रकार ने पूछा।

अरे डर कैसा! देश की रक्षा करते हुए यदि प्राण भी न्योछावर करना पड़ें तो यह मेरा सौभाग्य होगा। - सैनिक का स्पष्ट जवाब था।

पत्रकार ने सैनिक से उसके नाम, शिक्षा, परिवार आदि के संबंध में कई प्रश्न पूछे और फिर अंतिम प्रश्न किया ङ्क इतनी कठिन परिस्थियों में भी देश की सेवा करते हुये, क्या कभी किसी बात पर आपको दुःख, पछतावा, रंज अथवा खेद का अनुभव हुआ है?

हाँ, हम शत्रु देश को तो उसकी हर चाल का मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम हैं, किन्तु बहुत दुःख होता है जब देश के अंदर से आवाज आती है - भारत तेरे टुकड़े होगे। - सैनिक ने निराश होते हुए उत्तर दिया।

कहानी

डॉ. सतीश 'बब्बा'

दिल के करीब आके

जीवन का हर लम्हा यादगार होना चाहिए। जीवन का हर एक पल संग्रहणीय होता है। जीवन एक संगीत है, जीवन की सांसें जीवन वीणा को झंकृत करती हैं। मनुष्य को कुशल संगीतकार होना चाहिए ताकि एक मधुर स्वर निकले और मोह ले हर जीवधारी को!

सुमित और अपर्णा ऐसा ही जीवन जी रहे थे जो सुंदर संगीतमय था।

अपर्णा सुमित के जीवन वीणा से ऐसा संगीत निकलता था जो सभी को पसंद था।

हम सबको संचालित करने वाला कोई एक और है। जो कुछ भी नहीं देखता; उसे निर्दयी भी कहा जा सकता है।

अपर्णा और सुमित ने एक पोते को अपने संगीत का एक हिस्सा बनाने के लिए, उसे पाला - पोसा, उसके सभी नखरे सहे थे।

लेकिन यह क्या उस निर्दई संचालक को सुमित का जीवन रास नहीं आया था। और एक दिन उसने अपर्णा को अपने पास बुला लिया था। कहते हैं कि, अच्छे की पूछ सभी जगह है।

अब सुमित का जीवन संगीत मौन हो गया था। स्वर - ताल सब बेकार वाले हो गए थे।

जीवन में मेरा मानना है अगर पुरुष के पास से दो चीजें चली जाती हैं तो फिर पुरुष का जीवन बेकार हो जाता है; वह है पत्नी और पैसा! पत्नी के नहीं रहने से पैसा अपने आप चला जाता है।

सुमित तो बचे जीवन को उस अपनी वीणा, अपर्णा की याद में कुछ अंतरों के सहारे जीने की कोशिश कर रहा था।

सुमित और अपर्णा के वीणा की एक तार उनका पोता अब बड़ा हो गया था। हाईस्कूल की पढ़ाई कर रहा था। मोबाइल में गेम खेलने लगा था।

वह पोता सुमित के पैसे चुराने लगा था। सुमित मोहबस उससे पूछता था। वह ÷नहीं÷ कहता था तो सुमित उसे जाहिर नहीं होने दिया करता था इसलिए कि, इसे कोई मारे नहीं!

सुमित तमाम उपाय से उसे समझाया भी लेकिन, कोई फर्क नहीं पड़ा!

एक दिन सुमित सबकुछ छोड़कर एक अनजान मार्ग पर चला गया था।

सबकुछ त्याग कर सुमित तपस्वी जीवन जीना चाहता था। कोई भी राग अलापना नहीं चाहता था। उसने एक एकांत स्थान में अपने रहने का ठिकाना बनाया था।

आबादी और अंधविश्वास इतना अधिक बढ़ गया था कि, कहीं भी रह पाना अकेलापन लाना मुश्किल था। वैसे सुमित भीड़ में भी अकेला था। जो उसके दिल के करीब आके चला गया था। तो उसके करीब अब शून्य के अलावा कुछ भी नहीं था।

दुनिया कुछ भी नहीं माने, वह आज के खुले विचारों को अपने-आपको माने! लेकिन दिल की गहराई में जो है, वही जीवन का हिस्सा है। दिल के करीब जो है, वही जिंदगी है।

भीड़ को वह कैसे रोक सकता था। भीड़ तो जानवरों की भी, पक्षियों की भी हो सकती है। फिर मनुष्य की भीड़ को भीड़ मानना चाहिए या नहीं यह आप पर निर्भर है!

सुमित कोई चमत्कारी बाबा नहीं था। फिर भी लोग उसके मौन को ही चमत्कारी मान रहे थे। बड़ी मुश्किल होती है जीवन जीने में। कहीं अपने ही, इस जीवन को जीने नहीं देते हैं; अपने हिसाब से! कहीं पराए भी, जीवन को जीने नहीं देते हैं!

इसीलिए जिंदगी को अबूझ पहेली कहते हैं। क्या बला है जिंदगी, कोई समझता ही नहीं है। बोलो तो मुसीबत, चुप रहो तो मुसीबत!

बिना कुछ कहे, बिना कुछ मांगे लोग खाने - पीने की चीजें, मेवा - मिष्ठान और फलों का ढेर लगा रहे थे। सुमित जगह भी बदला और बहुत कठिन, घनघोर जंगल में भी छिपा फिर भी लोग ढूंढ ही लेते थे।

सुमित के पास पेट था, लेकिन वह बहुत कम भोजन में भर जाता था। अब तो पत्तियों में भी संतुष्ट होने की आदत डाल लिया था।

सुमित सोच रहा था कि, जितना यह भीड़ मेरे लिए परेशान है, समय, धन सबकुछ देने के लिए तैयार है; उतना किसी जाने - माने गरीब परिवार की मदद करने के लिए परेशान होते तो देश से कुछ गरीबी कम होती!

अक्सर लोग चाईंबाज बाबाओं को बहुत कुछ दे देते हैं; उनका आशीर्वाद पाने के लिए! ऐसी भीड़ से झूठ बोलकर लाखों का वारा-न्यारा करते हैं बहुत से ढोंगी बाबा!

गांव के दुलहा दीन अहीर ने लड़का पाने के लिए एक बाबा को बहुत सारा धन दे दिया था। फिर आज तक वह साधु दुबारा दिखाई नहीं दिया है। और न दुलहा दीन के कोई लड़का ही पैदा हुआ है।

कितने बाबाओं ने जमीन में गड़ा धन निकालने के बहाने न जाने कितनों से पैसे ऐंठ ले गए थे।

सुमित को समझ में आ रहा था कि, अपने घर से अच्छा कहीं भी नहीं है। जहां हमने कितने अच्छे दिन बिताए थे। भलाई आज वो संगीत नहीं है, फिर भी उसकी याद में तो जिंदगी बिताई जा सकती है।

सुमित को बाबा बनने से बहुत कुछ अनुभव हुआ था। तमाम परियों, सुंदरियों का सानिध्य प्राप्त होता था। किसी को धन चाहिए, किसी को बाधा निवारण हेतु कृपा चाहिए और किसी को बच्चा चाहिए, किसी को रोग से, किसी को कष्ट से छुटकारा चाहिए! बाबा न हुआ डाक्टर और चमत्कारी देव हो गया!

चाहता तो सुमित एक नई पहचान के साथ नई जिंदगी जी सकता था। बाबा बनने में तो कोई कमी भी नहीं दिखाई दे रही थी। चारों तरफ से माल ही माल, मौज ही मौज दिखाई दे रहा था। चेला, चेलाइनों की कमी नहीं थी; सेवा के लिए सभी तैयार थे!

दिल के करीब आके बात अटक गई थी। सुमित को अपनी पिछली जिंदगी के यादों के सहारे जीने में यकीन था। वह अभाव में रहकर तपस्वी जीवन जीने का मन बना लिया था।

उसने बाबा बनकर ऐश की जिंदगी को ठुकरा दिया था और उसे यह यकीन था कि, भगवान ने मुझे घर में रहकर तपस्वी जीवन जीने के लिए, जीवित रखा था और मैं कहां से कहां पहुंच गया।

अब जब सुमित के जीवन की वीणा का सुर ताल ही टूट गया था तो, उसे नए गीत गाने का कोई हक नहीं था। वह अब पुनः अपनी जन्मभूमि की ओर लौट पड़ा था। जहां इंतजार में हैं उसकी यादें, अपर्णा के साथ बिताए गए अनमोल संगीतमय पल और वह पोता जो पैसे चुराया करता था।सबसे चुराकर, आधी रात में सबकुछ छोड़कर सुमित तेज कदमों से चल पड़ा था, उस स्टेशन की ओर, जहां से उसके गांव की ट्रेन मिलती है।

कथा

सुनील कुमार महला
समीक्षक

बड़ी भाबु

कि अस्सी बरस की है बड़ी भाबु आज। झुर्रीदार चेहरा, सांवला रंग, सफेद बाल, हाथों में दो-दो लाख से बनी पुरानी चूड़ियां,पैरों में चांदी के मोटे कड़ले पहने बड़ी भाबु का व्यवहार आज भी ठीक वैसा का वैसा ही है, जो आज से चौंतीस-पैंतीस बरस पहले था। बड़ी भाबु अपनी बहन राजकंवर के साथ आज भी उस छोटे से मकान में ही रहती है और दोनों बहनों में आज भी वही आपसी तालमेल, अपनत्व की भावना, प्रेम-प्यार है। राज कंवर छोटी उम्र से ही बड़ी भाबु की बहुत इज्जत, मान-सम्मान करती थी। बड़ी भाबु का कहना तो शायद राज कंवर ने टाला ही नहीं था। कभी-कभार बड़ी भाबु ने गुस्से में किसी बात पर यदि ऊंची आवाज़ में राजकंवर को कुछ कह-सुना, या डांट-फटकार भी दिया तो भी राजकंवर ने कभी त्योरियां नहीं चढ़ाई। बरसों से हम भाबु व राजकंवर के पड़ौसी रहे हैं, और आज भी हैं । पड़ौसी होने के कारण मैंने बड़ी भाबु और राजकंवर को बहुत ही नजदीक से देखा है, दोनों ही हमेशा से बहुत ही शांत हैं,सहज हैं और बहुत ही व्यवहार कुशल भी। दोनों बहनें एक ही घर में ब्याही थी।

बड़ी भाबु के स्वयं की कोई संतान नहीं थी और उनके पति सेना में हवलदार थे। बहुत बरस पहले एक आतंकी हमले में वे शहीद हो गए थे। इधर, राज- कंवर के पति भी बहुत बरस बीते एक एक्सीडेंट में मारे गए थे । राजकंवर के तीन बेटियां हैं-छुटकी, भानु और प्रिया। बड़ी भाबु और उनकी बहन राजकंवर दोनों ने अपने पतियों की मृत्यु के बाद बहुत मेहनत की, और सबको अच्छे घरों में ब्याह दिया, आज उनके दोहते-दोहितियां भी हैं। पतियों की मृत्यु के बाद दोनों बहनों ने एक साथ ही रहकर जीवनयापन करने की ठानी, जिम्मेदारी का बोझ जो उनके कंधों पर आ पड़ा था। बड़ी भाबु के पति जब सेना में थे, तो परिवार चलाने में कभी इतनी मशक्कत का सामना बड़ी बाबु को नहीं करना पड़ा था। राज कंवर के पति एक प्राइवेट कंपनी में काम करते थे, उनके इस संसार से विदा हो जाने के बाद तीन बेटियों के लालन-पालन की संपूर्ण जिम्मेदारी राज कंवर के साथ बड़ी भाबु पर भी आ पड़ी। दुनिया में उन दोनों बहनों का और कोई न था।

बड़ी भाबु को पति की मृत्यु के बाद सेना से हालांकि कुछ पेंशन मिलती थी, लेकिन बहन राजकंवर की तीन बेटियों के साथ घर खर्च चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था। बेटियों को पढ़ाना-लिखाना भी था। इसलिए दोनों ने कुछ समय तक एक रईस के घर में मेड तक का काम किया। इससे दोनों बहनों व तीन बेटियों का गुजर-बसर ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन कुछ समय बाद वह रईस अपने परिवार के साथ विदेश चला गया और बड़ी भाबु और राज कंवर का मेड का काम छूट गया। नौबत फाकाकशी की आ गई थी। पेंशन इतनी कम थी कि दो जून की रोटियां जुटाना भी मुश्किल हो गया था। मुझे याद आता है तब मैं पन्द्रह-सोलह साल का रहा होऊंगा, बड़ी भाबु तब भी मुझसे उतना ही प्यार करती थी, जितना कि आज। तब बड़ी भाबु हमारे घर अक्सर आती-जाती थी, विशेषकर वह मुझे बहुत प्यार करती, आशीर्वाद देती, खूब लाड़ -प्यार करती और बहुत बार मेरे लिए खाने-पीने के लिए कुछ न कुछ बचाकर लाती। उनके साथ दो पल बैठकर मुझे बहुत अच्छा महसूस होता। मुझे याद आता है राज कंवर की बेटियां धीरे धीरे बड़ी हो रही थी, और मेड का काम छूट जाने के बाद इधर

घर का खर्च भी लगातार बढ़ रहा था। इधर बेटियों को पढ़ाने-लिखाने का खर्च, घर का खर्च, स्वयं का खर्च। कुछ समय बाद दोनों बहनों ने एक निजी शैक्षणिक संस्थान में हास्टल में मेड का काम ज्वाइन कर लिया था। दोनों बहनें उस संस्थान में लड़कियों के हास्टल में मेड का काम करती। मैस में खाना बनातीं और यहां तक कि हास्टल की लड़कियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी उन पर थी। संस्थान इंचार्ज ने दोनों बहनों की ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सरलता-सहजता के कारण उनको रहने के लिए एक छोटा सा कमरा भी अलाट कर दिया। बड़ी भाबु और राज कंवर के कमरे में बमुश्किल रसोई का जरूरत का सामान था और मैंने देखा है कि उनके कमरे में दो चारपाइयां भी ठीक तरह से बिछाने की जगह भी नहीं थी। लेकिन दोनों बहनों ने अपनी कमाई से लोहे की चारपाईयां खरीद कर कमरे को सैट कर रखा था, ताकि सभी सदस्यों को सोने, विश्राम करने की जगह नसीब हो सके।

बड़ी भाबु और राज कंवर ने लोहे की एक चारपाई के ऊपर दो चारपाइयां डालकर कमरे को ऐसे व्यवस्थित कर रखा था कि सभी सदस्यों के लिए वह कमरा पर्याप्त-सा लगने लगा था। कोने में उन्होंने रसोई का सामान सजा रखा था, दो कुर्सियां, एक ब्लैक एंड व्हाइट टीवी भी उन्होंने अपनी तनख्वाह से खरीद लिया था। बेटियों का एडमिशन भी उसी संस्थान में करवा दिया, जिसमें वे हास्टल मेड का काम करतीं थीं। दरअसल बड़ी भाबु और राज कंवर को उनके अच्छे व्यवहार को देखते हुए संस्थान मालिक द्वारा बच्चों को पढ़ाने के लिए रियायत दी गई थी।

हास्टल में मेड का काम करने से जो तनख्वाह उन्हें मिलती थी,उसी से तीनों बेटियों की शादी भी खूब धूमधाम से की। परिवार का खर्च तनख्वाह और बड़ी भाबु की पेंशन से चलाया। मुझे याद है लगभग चौंतीस बरस तक लगातार उन्होंने संस्था को अपनी सेवाएं दीं। इन चौंतीस बरस में उन्होंने संस्था में रहते हुए ही तीनों बेटियों को अच्छे घरों में ब्याह दिया। आज तीनों बेटियां बहुत खुश हैं और अपनी मां राज कंवर व बड़ी भाबु से बीच -बीच में मिलने,उनकी कुशल-क्षेम जानने उनके यहां चली आतीं हैं। संस्था में जब दोनों बहनों ने ज्वाइन किया था,उस समय हास्टल में 1200-1300 लड़कियां थीं। आज भले ही संस्था अनेक वित्तीय संकटों का सामना कर रही है, हास्टल, स्कूल, कालेज में बच्चों की संख्या भी बहुत कम रह गई है। लेकिन बड़ी भाबु और राज कंवर के संस्था के प्रति त्याग, उनके असीम समर्पण, ईमानदारी के चलते उनको संस्था का हिस्सा बनाकर रखा हुआ है, हालांकि संस्था ने अनेक कर्मचारियों की हमेशा हमेशा के लिए छुट्टी कर दी थी। आज बड़ी भाबु, राज कंवर दोनों बूढ़ी हो गई। काया भी अब उनका साथ नहीं दे रही थी , लेकिन जितना काम उनसे संभव हो पाता है, आज भी पूर्ण समर्पित भाव से उसे करतीं हैं। दीपावली के दूसरे दिन(राम-राम) के दिन मैं बड़ी भाबु और राज कंवर से मिलने,उनका आशीर्वाद लेने पहुंच गया। अक्सर होली-दीवाली, रक्षाबंधन के त्योहार पर या किसी अन्य अवसर पर मैं बड़ी भाबु और राज कंवर से मिलने पहुंच ही जाता हूं क्यों कि उनकी यादें, उनका जीवन-संघर्ष देखकर मेरा मन मुझे झकझोरने लगता है। इसी घर(छोटे से कमरे) से मेरी कितनी स्मृतियां जुड़ी हुई हैं।

मुझे याद आता है कि होली दिवाली, रक्षाबंधन पर हम सभी के लिए बड़ी भाबु मिठाई का डिब्बा जरूर लातीं थीं। मेरे कोई सगी बहनें नहीं थी, इसलिए राज कंवर की बेटियों को ही अपनी बहनें बना लिया था। शादी नहीं होने तक हर साल तीनों बहनें मुझे राखी बांधने आती रही थी।मैं बड़ी भाबु व राज कंवर को बूढ़ी मां कहकर पुकारता रहा हूं। उनको याद करके अक्सर मैं स्वयं को टटोलता हूं। एक प्रश्न उभरकर सामने आता है-क्या बड़ी भाबु , राज कंवर जैसी बूढ़ी मां की स्मृतियों को एक झटके से भुलाया सकता है ? आज जब हम बड़ी भाबु व राज कंवर (बूढ़ी अम्मा) से मिलने पहुंचे तो मुझे देखकर बूढ़ी अम्मा की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। वे बोलीं -बेटा ! इस बार बहुत समय से मिलने आए। बेटा अब हम दोनों बूढ़ी हो गई हैं, समय बदल गया है, आजकल कौन किसे पूछता है ? मैंने प्रतिउत्तर में कहा -नहीं अम्मा ऐसी बात नहीं है। फौज में ड्यूटी होने के कारण मैं कभी-कभार ही त्योहार पर घर आ पाता हूं। इस बार दिवाली पर आपसे मिलने चला आया। मुझे आपका उस दिवाली पर सौंपा वो मिठाई का डिब्बा और आपका असीम स्नेह आज बरबस ही याद आ रहा था, और आज मुझसे रहा नहीं गया और मैं आपसे मिलने चला आया। आपका स्नेह मुझे यहां खींच लाया।

बूढ़ी भाबु और राज कंवर अम्मा ने यह सबकुछ बड़े ही ध्यान से सुना और जब हम काफी देर हथाई के बाद अपने घर की ओर प्रस्थान करने लगे तो बूढ़ी भाबु ने मेरे हाथ में एक दौ सौ का नोट और राज कंवर अम्मा ने मिठाई का डिब्बा थमा दिया और आंखों में खुशी के आंसू भरकर बड़ी भाबु मुझसे कहने लगी - बेटा ! बूढ़े मायतों से मिलने आया करो, इस संसार में आपसी सौहार्द, मेल-मिलाप,प्रेम-प्यार और अपनत्व ही तो साथ चलता है, शेष तो सब मोह-माया ही है। मैंने मिठाई का डिब्बा और दौ सौ रुपए का नोट लिया और मैं अपनी माताजी के साथ अपने घर की ओर प्रस्थान कर गया। बीच थोड़े से रास्ते में मैं लगातार यह सोच रहा था कि आदमी का मन हमेशा बड़ा होना चाहिए, भले ही उसके पास लेने-देने के लिए कुछ हो या नहीं। बड़ी भाबु शुरू से ही गरीब परिवार से थी, परिवार में ज्यादा संसाधन मौजूद नहीं थे। लेकिन मुझे बड़ी भाबु से यह सीख मिली कि केवल और केवल धन-संपत्ति से ही मन व आत्मा कभी तृप्त नहीं होते हैं। आपसी सौहार्द, मेल-मिलाप, प्रेम-प्यार, सद्भावना ही वास्तव में सुखी जीवन की सच्ची राह है।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

सरहदों से परे के प्रयोगधर्मी कलाकार सुब्रमण्यम

भारतीय कला को अपनी जड़ से जुड़ाव के साथ आगे बढ़ना चाहिए और खुशी की बात यह है कि ऐसा हो भी रहा है। लोग जड़ की तरफ लौट भले ही न पा रहे हों पर मन में तड़प विद्यमान है। आज भारतीय कलाकारों में रचना धर्मिता गज़ब की नज़र आ रही है चित्रों में गाँव समाज पशु-पक्षी बरगद पीपल आदि भी नज़र आने लगा हैं जबकि बीच के कुछ समय से चित्रों में ये नदारद से हो गये थे। जरुरी नहीं कि वैश्विकता के नाम पर हम अंधी दौड़ या भेड़-चाल में शामिल हो जायें और अपने ही जड़-चेतन को दाँव पर लगा दें। वर्षों से चली आ रही संस्कृति, पुरखों की अमानत, विरासत आदि-आदि को पाश्चात्य के नाम पर गर्त में धकेल के क्या हम चैन की नींद सो पायेंगे? क्या हमें ग्लानि नहीं होगी? क्या हम पाश्चात्य को अपने जड़ के साथ नहीं अपना सकते? कुछ तुम बढ़ो कुछ हम बढ़े वाली पद्धति क्या नहीं अपनाई जा सकती? क्या जरुरी है हर बार हम ही समझौता करें? ठीक है हम आधुनिकता रुपी चादर ओढ़ना चाहते हैं तो ओढ़िये न किसने रोका है पर पाश्चात्य के बुरे से बुरे को ग्रहण करके क्यों? अपने लोक के अच्छे से अच्छे के साथ क्यों नहीं? अपने लोक चित्रों पर उनसे (पाश्चात्य समीक्षकों से) किसी अच्छे समीक्षा की उम्मीद ही क्यों? जो हमारे जड़ को बस मखौल उड़ाने का साधन समझता हो, क्यों न उसके विचारों को औने-पौने में बौना कर दें? ऐसे कुछ प्रश्न हैं जो विचलित करने को काफी हैं। राजा रवि वर्मा को क्या उन्होने सिखाया? समझाया? क्या उनके चित्रों का मजाक नहीं बनाया? क्या वर्मा जी हताश हुए? नहीं सिखाये, गये भाड़ में। क्या वर्मा का कद घट गया? नहीं कभी नहीं। अपने को अपना ही समझ सकता है जो अपना अतीत, इतिहास देखा हो, भोगा हो, भीग-भीग के जिया हो। क्या वर्मा की कृतियां वहाँ के गैलरियों में नहीं हैं? हैं और सदा रहेंगी वो उनके रिसर्च का विषय हैं जिसे वो कभी भी खोना नहीं चाहेंगे। हमें पाश्चात्य का रुख करना ही है तो अपने लोक, लाज, संस्कृति रुपी थाति के साथ आगे बढ़ना चाहिए ताकि उनको भी कुछ हमसे लेने सिखने का मौका मिले विश्वगुरू बस और बस सीखने ही जाय, सिखा न पाय, एक भारतीय को शोभा देगा क्या भला। कभी कोई पाश्चात्य समीक्षक लिखता है क्या कि फला कलाकार पर अजंता के चित्रों का स्पष्ट साफ-साफ जाहिर है, होगा कोई, कभी भूल से लिख दिया होगा कुछ, पर हमेशा नहीं। वॉन गॉग को कइयों ने ठुकरा दिया था पर उससे उसकी महानता छीन पाये क्या भला? विवेकानंद की बातें वैश्विक स्तर पर क्या जग जाहिर नहीं है? फिर हम क्यों टकटकी लगाये निहार रहे हैं उस ओर जिधर के लोग हमारे संस्कृति तक पहुँच ही नहीं सकता, हमें अपने लक्ष्य अपने तरीके से निर्धारित करने होंगे अपनी शैली खुद इज़ाद करनी होगी। क्या जरुरत है हर कलाकृतियों पर ये माने, पिकासो, रेंब्रा, लियोनार्डो से प्रभावित है कहने की जबकि अजन्ता, एलोरा, सिगिरिया, खजुराहो, कोणार्क जैसे थाती से हमारा घर भरा है कभी-कभी पड़ोस में बनी सिर्फ आलू की तरकारी जिसमें नमक और पानी के सिवा कुछ भी नहीं है के आगे घर में बने पनीर को लोग ठुकरा देते हैं लेकिन ये कभी-कभी ही अच्छा होता है।

इंसान का धड़ भले ही कर्मस्थली में हो पर मन जन्मस्थली में पहुँच जाने को तड़पता ही रहता है। माई, माई ही होती है उसका स्थान कोई नहीं ले सकता उसका आपके जीवन में होना तब समझ में आता है जब वो हमारे बीच नहीं होती। हमारी कला को भी ऐसे ही आगे बढ़ना चाहिए अपने माँ-बाप पुरखों के जुड़ाव के साथ। कला में परिवर्तन होते रहना चाहिए और हो भी रहा है पर थाती सहेजते हुए। ऐसे कई कलाकार हैं जिनकी कला वैश्विक स्तर पर छाई हुई है और सराही भी गई है। उन्हीं में एक कलाकार है जिनके रंग-रेखा एक दूसरे से भिन्न राह पर चलते हुए भी अलग-अलग अपने अस्तित्व को सम्हाल कर चलने में सफल हुए है रंगों का ऐसा उठा पटक वो भी गम्भीर और हल्के हर मुद्दों पर, रेखाओं के साथ और अलग दोनों दशाओं पर इनके पहले शायद ही कोई कलाकार किया हो और ये कलाकार हैं के जी सुब्रमण्यम जिनका जन्म केरल के एक पण्डित परिवार में हुआ। सुब्रमण्यम शुरु में मार्क्स और गाँधी के विचारों से प्रभावित रहे परन्तु जेल में रहते हुए कुछ अपनों से धोखा खा चुकने के बाद उनका ऐसे परिस्थितियों से मोहभंग हो गया जहाँ सिर्फ और सिर्फ वादे थे जो समय आने पर धराशायी हो चुके थे, सुब्रमण्यम बिचलित हो उठे परिणामतः उनके कदम कला की ओर उन्मुख हो उठे। उनके इस निर्णय के पीछे कुछ हद तक सुपरिचित भारतीय कला आलोचक आनन्द कुमार स्वामी के लेख भी थे जिसके सम्पर्क में ये अभी-अभी आये थे। सुब्रमण्यम प्रयोगधर्मी थे फिर चाहे वो कला के क्षेत्र में हो या जीवन के गूढ़ से गूढ़, विषम से विषम परिस्थितियों में, उनका प्रयोग जारी ही रहता। इनका दाखिला शान्तिनिकेतन में करवा दिया गया

जहाँ नन्दलाल बोस, रामकिंकर बैज और बिनोद बिहारी मुख़र्जी सरीखे महान कलाकारों का सानिध्य मिलते ही इनके व्यक्तित्व और कला दोनों में निखार आ गया। %सैर कर दुनिया के गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ, जिंदगानी गर रही तो नौजवानी..% इस विचार से भी शायद इनकी सहमति बराबर बनी रही इनके भ्रमण और यात्राओं का ही असर है कि इनकी कला शुरु से ही सीमाओं से परे की कला रही हैं। %पक्षी, नदियां, पवन के झोंके कोई सरहद ना इन्हें रोके%। ये आजाद पक्षी की तरह बिचरते रहते थे तभी इनकी कला, काल परिस्थिति सरहद यहाँ तक कि माध्यमों से परे की कला थी तभी तो रेखांकन चाहे चारकोल से हो या वैसे भी में, रंग अपने मौलिक रुप में प्रयोग में लाया गया है, वो भी चटख और सपाट बिना किसी लाग लपेट के। शांतिनिकेतन के हिंदी भवन में विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ म्यूरल बनाने या कहें सीखने का हल्का सा मौका क्या मिल गया म्यूरल में भी प्रयोग पे प्रयोग कर डाला गया इनके द्वारा जिसका प्रभाव लखनऊ के रविंद्रालय के बाहर लगभग 9 फिट ऊँचे टेराकोटिक म्युरल में देखा जा सकता है जिसकी लंबाई लगभग 81 फिट है या फिर दिल्ली के गाँधी दर्शन म्यूरल में भी। सुब्रमण्यम बड़े ही लगन के साथ अपने कलाकृतियों में रमें रहते थे और पढ़ने पर, समझने पर भी ध्यान ज्यादा था इसके साथ ही कला के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर भी इनकी अच्छी पकड़ थी। छात्रों को सिखाते समय भी हर बंधन से परे रखा इन्होंने ताकि बच्चे कला में कुछ अपना कर सकें। छात्रों से गम्भीर से गम्भीर मुद्दों पर बहस करना वो भी बिल्कुल ही सहज तरीके से इनके विद्वता की ही परिचायक थी।

अकबर पदमसी के शब्द अगर उधार लें कि ÷बहुत मुस्कराना, जिसे हँसना कहते हैं वह सस्ता लगता है या कह सकते हैं मौन जहाँ है वहाँ ज्यादा सम्वेदना और गरिमा है÷ इनके चित्रों में भी हंसी जहाँ भी है हल्कापन ही महशूस कराती है साथ ही व्यंग्यता लिए है हास परिहास युक्त मुस्कान है जो एकबारगी अपने हल्केपन को खुद में समेटने का प्रयास भी करती है। इनकी अधिकतर कृतियाँ मौन हैं पर गम्भीर और संवेदनायुक्त हैं। मुखौटों की भी अधिकता है। चित्र %%अनइजी इन्टेरियर्स%% जिसमें गहरे और हल्के भुरे रंगों का प्रयोग बीच-बीच में आड़ी तिरछी रेखाओं के मध्य सफेद, बैगनी और नीले रंगों का मुखौटे में समा जाना वो भी कुछ व्यग्र रेखाओं के साथ, रंगों का टूटते हुए क्रम में प्रयोग भी अस्थिरताओं को जगह देती है। नारंगी रंगों का प्रयोग भी दर्शनीय है। चित्र में स्पष्ट आकार ना होते हुए भी व्यग्रता स्पष्ट है जो इनके चित्रों की विशेषता है।

शुरुआती दौर में बंगाल शैली को इन्होने भी जीना शुरु किया लेकिन जल्द ही अंदर की तड़प इन्हे इस मार्ग से विरत होने का आग्रह करने लगी और कुछ ही समय बाद इनके चित्रों में अपना अधिकार अपना स्ट्रोक, अपने विषय और अपनी शैली में दृष्टिगोचर होने लगे, माध्यम के साथ-साथ फलक पर प्रयोग भी जारी रहा फलत- कैनवस पर ही बंधे रहने की अपेक्षा प्लास्टिक सीट और एक्रेलिक सीटों पर भी काम करने का सिलसिला चल निकला। कहना गलत न होगा कि सुब्रमण्यम निर्मल जल की तरह बहते हुए अपनी कला यात्रा की है। रास्ते में जो भी रंग, गुण, पदार्थ मिलता गया अपने में आत्मसात करते गये पर अपने जल होने के अस्तित्व के साथ, तभी तो स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट, लंदन जहाँ 1955-56 में जाने के मौके के बाद लगभग 57 से लेकर 61 तक हैन्डलूम बोर्ड मुंबई में बिताने के बाद इनके चित्रों में सामाजिक मिथकों का भी समंवय रुप दिखाई पड़ने लगता है और बच्चों के खिलौने जो इन्होंने खेल-खेल में बनाए होंगे एक बार फिर से बालपन को समझने के मौके को हथिया लिया इसी बहाने, बच्चों के लिए इलेस्ट्रेशन बनाए कहानियाँ भी लिखी इन्होंने। मध्ययुगीन लघु चित्रण, पत्थर गुफाओं में अंकित जनजातीय भित्ति चित्रण से रंग-रेखाओं को उसी अंदाज में कुछ चटकता के साथ उठाना, लोक कलाओं को चारकोल और चटख रंगों में पिरो देना, टेक्सटाइल स्टाइल को नये अंदाज़ में अपने चित्रों में समाहित कर लेना एक नये सिद्धांत के जनक तो आप खुद ही हो गये हैं लेकिन पूर्व के कुछ विद्वान जो आपके चित्रों में इन सभी विशेषताओं के साथ ही यह भी मानते हैं कि भारतीय शिल्प के साथ पाश्चात्य के विविध सिद्धांत आपके कला में समायोजित है को मैं भी मान लेता हूँ पर मज़े की बात यह है कि अंतर्मन मानने को तैयार नही हैं। आपके विषय भी अपने और सिद्धांत भी अपने ही हैं आपकी यात्राएँ ही आपके विचारों आपके नजरियें में सागर सी अथाह गहराई के कारण हैं। इनकी अधिकतर कृतियाँ अशीर्षक ही रही हैं मतलब साफ है कि ये दर्शक को भी अपने स्तर पर सोचने को स्वतन्त्र छोड़ देते थे बंधन और सीमाओं से परे। रक्तिम आँखों के बीच हरी-हरी पुतलियां नष्ट हो चुके परिवेश में भी उम्मीद की किरण साबित हुई हैं। स्त्री पुरुष विनोद में भी व्यंग्य साफ झलकता है। कठपुतली जैसे चेहरों से भी भाव झलक रहा है। ब्रश स्ट्रोक लगभग हर कमियों पर भारी है। इनके अधिकतर चित्र परिप्रेक्ष विहीन से लगते हैं पर भाव और खूबसूरती में कहीं से भी बट्टा नही लगता। और अंत में उनके ही शब्दों में कहें तो चित्रकृति ऐसी हो जो गूँजती रहे। स्मृति में बनी रहे।

स्मृति शेष

कारुलाल जमडा 'कारुण्य'

लेखक लोक-संस्कृति के अध्येता हैं।

छठ गाई और छठ में ही समाई शारदा जी

छठ पूजा को अपने सुरीले गीतों से सजाने वाली बिहार कोकिला शारदा सिन्हा के स्वर इस महापर्व के पहले ही दिन सदा के लिए मौन हो गए। शारदा जी के गीत हमारी आस्था, हमारी संस्कृति का हिस्सा हैं। बिहार की वह गायिका जो मैथिली, मिथिलांचल मातृभूमि से जुड़े हुए होते भी सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। घर-आंगन में गाए जाने वाले मंगल गीतों से आपने बिहार को देश-दुनिया में पहचान दिलाई। जिस तरह मनमोहक गीत अपनी माटी की खुशबू पाकर अमर हो गये, वैसे ही आप भी अमर हैं अमर रहेंगी। लोक संगीत की महान गायिका स्वर-सम्राज्ञी शारदा सिन्हा द्वारा गाए गए भोजपुरी, मैथिली, और मगही गीतों ने हमारी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संजीवनी दी है। उनके गीतों में केवल सुर और ताल ही नहीं, बल्कि मिट्टी की सुगंध और परंपराओं की मिठास भी घुली रहती है।

बिहार की बेटी और बहू बिहार कोकिला सुप्रसिद्ध लोकगीत एवं भजन गायिका शारदा सिन्हा जी अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा गाये गये सभी प्रकार के गाने युगों-युगों तक हर बिहारवासी के कानों और दिलों दिमाग में गूंजते रहेंगे। खास कर छठ महापर्व के गीत। छठ पूजा के पहले दिन 'नहाय खाय दिन' ही उनका इस दुनियां से कुच कर जाना हर छठ्वर्तियों के लिए एक बड़ा सदमा है।कैसा संयोग है कि जिनके गीत छठपर्व में गुंजायमान रहते हैं । वो स्वर कोकिला छठ पर्व के दिन ही स्वर्गवासी हो गई। आप छठ पर्व के गीतों की वाणी थीं, छठ के महापर्व के दौरान ऐसा लगता है कि वह आज छठी मईया में ही विलीन हो गईं समा गई। जो मरकर भी गायकी कि संसार में अपना स्वर छोड़ जाए वो है स्वर- कोकिला शारदा सिन्हा। उनके गानों से बिहार और मिथिलांचल का कोई भी समारोह अछूता नहीं रहता था। समारोह तो अब भी होंगे परंतु अब कोई नया प्रयोग नहीं होगा।

लोकसंस्कृति को अपने मधुर गीतों से सिंचित करने वाली आदरणीया शारदा सिन्हा जी की मखमली आवाज लाउडस्पीकर पर बजने वाले भजनो का पर्याय थी। और ये आवाज़ पर्वों पर मालवा तक गूंजती रहती।

भोला का देखली मगन भइले जियरा ...
बार अइली हो जगदंबा घर मे दियरा ...
का दइके शिव का मनाइब हो शिव मानत नाही

इन भजनों में शारदा जी की खनकती हुई अद्भुत आवाज हर किसी के बालमन को ऐसे लगती थी जैसे माँ लिए बड़ी हुई है। उस समय शारदा सिन्हा जी की दो एलबम ' पिरितिया' और ' दुलहिन ' के गीतों ने न केवल पूर्वांचल के लोकजीवन मे मंत्रवत प्राणप्रतिष्ठित होने का गौरव पाया, अपितु उनकी गूंज मालवा और मेवाड़ तक पहुंच गई।।

पिरितिया काहे न लगवलू .....
कोयल बिना बगिया न सोहे राजा ....
अमवा महुवआ कै झूमे डरिया ....

गंगा गोमुख से कल-कल करके उतर रही हों। उनके लोकगीत क्षेत्र और प्रदेश ही नहीं देश की सीमा को भी पार कर गए। जो लोग अभी पचास के दशक में हैं उनकी पूरी पीढी गाँवों मे शादी-ब्याह मे पारंपरिक लोकगीतों को सुनती- गुनती हुई, नौटंकी,रामलीला,नाच के लोकरंगो को निहारती हुई, 'हनुमान चालीसा' और 'रामचरित मानस' की चौपाइयों से अंताक्षरी खेलते हुए शाम को दादा, काका के साथ ओटलों पथ अपनी-अपनी चारपाइयो पर लेटे-लेटे उनके द्वारा कही जाने वाली नाट्य कथाओं, हरिश्चंद्र और सत्यवान-सावित्री के किस्सों 'रामायण' 'महाभारत ' की घटनाओँ के साथ नदियां के पार जैसी फिल्मों और भोजपुरी, बिहारी गीतों की मधुरता

उबटन लागि रही .....
लिखवली राजमतिया पतिया रोइ रोइ .....
पनिया की जहाज से पलटनिया वाले ...
पटना से बइदा बोलाइ द .....
लोगवा देत काहे गारी बता द बबुआ ...
साँवर साँवर सुरतिया तोहार दुलहा ....

बिहार से मालवा तक शादी, ब्याह , मेला ठेला कहीं भी यदि लाउडस्पीकर में कुछ बजता तो हिन्दी गीतों के साथ पूरा दबदबा इन्हीं गीतों का होता था ।

शारदा जी की आवाज ने बालीवुड को भी नया कलेवर दिया । नब्बे के दशक में बड़े सहज-सरल सरल मधुर गीतो के साथ एक हिंदी फिल्म आई ' मैने प्यार किया।'। इसका 'कहे तोसे सजना ये तोहरी सजनिया' शारदा सिन्हा जी द्वारा गाया गया। यह अमर गीत उस पूरी फिल्म की जान है।आंचलिक शब्दावली का यह गीत शारदा जी की आवाज से पूरा प्राण प्रतिष्ठित है। इसके पश्चात हम आपके हैं कौन मे भी उनकी आवाज का माधुर्य विदाई के संवेदना गीत भी प्राण प्रतिष्ठित हुआ। गाँव से जो लोक-संस्कार बिहारियों के साथ चलते आए हैं, उनमे शारदा जी के गीतों का बड़ा स्थान है ।

दिवंगत शारदाजी के जीवन से सभी को यह प्रेरणा मिलती है कि एक दिन जाना तो है ही पर कुछ ऐसा करके जायें के पूरा देश और समाज हमे अश्रुपूर्ण बिदाई दे सके। जिस छठी मैया को उनके गीतों से अर्ध्य प्राप्त होता था, उन्होंने अपने शरण में साक्षात बुला लिया। बिहार की सुप्रसिद्ध लोक गायिका श्रीमती शारदा सिन्हा का स्वर्गवास हर उस व्यक्ति को कष्ट पहुंचाने वाला है जिनने बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड के बड़े क्षेत्र और नेपाल के बिहार और उप्र से लगे हुए भाग में छठ ही नहीं अन्य सभी पर्व- त्यौहारों ,जीवन के जुड़े संस्कारों से संबंधित कर्णप्रिय और सबको समझ में आने वाली लोकगीतों का प्रयोग करते और उनका असर होते देखा है।

72 वर्ष की आयु में भी वे बिहार की लोक संस्कृति को नये आयाम देने के काम में सक्रिय थी। वे छठ पूजा की पर्याय बन गई थी।

आज घोर व्यवसायिकता, सतही लोकप्रियता और संकीर्ण प्रतिस्पर्धा के युग में हरदम बिकने को तैयार कलाकारों को अपनी विधा के उद्गम, स्रोत या मूल का अनुसरण करते हुए आत्मावलोकन करना चाहिए। जिससे वे अपने पुरखों और सांस्कृतिक गरिमा को कलंकित करने के पाप का प्रायश्चित कर सकें। लोक तत्व को ब्रह्माण्ड तक फैला देना उनके ही बस की बात है।?

शारदा सिन्हा होना आसान नहीं, कई जन्मों की तपस्या से ही संभव है..।'देखिए कि घर-घर में जिस व्रत के गीत उपयोग किया जाता है उस छठ के समय ही उनका निधन हुआ है। परमात्मा अवश्य ही उन्हें मुक्ति प्रदान करेंगे।

लघुकथा

नारियल

अविनाश अग्निहोत्री

मीनू तुम्हें मालकिन बुला रही है।ओह आज फिर लेट हो गई,दीवार पर लगी घड़ी पे नजर दे मीनू बड़बड़ाई।

सब कहते है मालकिन तो बड़ी सख्त है,कही नौकरी से ही न निकाल दे।इन्हीं विचारों के बीच वो लगभग कांपती हुई मालकिन के सामने पहुंची।

उसे देख मालकिन बोली, मीनू ये कुछ कपड़े और मिठाई तुम्हारे बच्चों के लिए है और ये तुम्हारा दिवाली का इनाम।

पर मालकिन मुझे तो अभी यहां काम करते बस कुछ ही दिन हुए है। हां पर त्यौहार तो सालभर बाद ही आया है न।

मालकिन ने मुस्कुराते हुए रुपयों से भरा एक लिफाफा भी उसे थमा दिया।और मीनू के गाल पर एक थपकी देते हुए उससे बोली,कल से समय का ध्यान रखना।

मीनू इतने पर भी उसे बस देखे जा रही थी।तब मालकिन उससे बोली,ऐसे क्या देख रही है। वो यहां सब आपको बहुत सख्त बोलते है न।

और तुझे क्या लगता है,उसकी बात सुन मालकिन ने उससे पूछा। हां मालकिन आप सख्त तो है पर बिलकुल नारियल की तरह।उसके पैरों की ओर झुकते हुए तब मीनू बोली।

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

इंटरटेंमेंट के चक्कर में पीछे छूटा कोर्ट ड्रामा

केरल स्टोरी से चर्चा में आई अदा शर्मा ओटीटी पर अपनी नई वेबसिरीज़ ' रीता सान्याल ' में नज़र आ रही हैं। इसमें वह एक क्रिमिनल लॉयर की केन्द्रीय भूमिका में हैं। कहानी हत्या के एक मामले से जुड़ी है । इस मामले में रीता के सामने है एक शातिर वकील, ठकराल जो रीता के पिता को मौत का जिम्मेदार भी है । कहानी की शुरुआत एक हल्के-फुल्के अन्दाज में होती है। जहाँ वकील रीता सान्याल (अदा शर्मा) रॉकी का बचाव कर रही हैं। रॉकी एक कुत्ता है, जिस पर पाँच फीट की बाड़ पर चढ़ने और चार पिल्लों के पिता बनने का आरोप है। दूसरे कुत्ते का परिवार इसके लिए दस लाख रुपये के मुआवजे की माँग कर रहा है। केस जीतने के बाद रीता की मुलाकात कोर्ट के बाहर ही केशव से होती है, जिसकी मां को स्थानीय विधायक पारव राणे की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। जब रीता, केशव से इस बारे में जानकारी चाहती है, तो वह बताता है कि यह अपराध उसकी माँ ने नहीं, बल्कि उसने खुद किया है और दावा करता है कि उसने 'परफेक ट मर्डर' को अंज़ाम दिया है। रीता अब केशव का यह केस लड़ती है। लेकिन कोर्टरूम में उसका सामना वकील एम राज ठकराल (राहुल देव) से होता है। रीता और ठकराल का एक इतिहास है। लिहाजा, अब लड़ाई सिर्फ कानूनी दाव पेच की ही नहीं, बल्कि काफी हद तक व्यक्तिगत भी हो जाती है ।

वेबसिरीज के पहले दृष्य से ही रीता सान्याल कानूनी व्यवस्था को हल्के में लेती है। यह निर्माताओं और लेखकों के इरादे बताने के लिए काफी है। मार्शल आर्ट्स में माहिर एक महिला 'ज़ी' का किरदार नीरीशा बसनेट ने निभाया है। उसे केशव को मारने का काम सौंपा गया है। लेकिन यह सिरीज की कहानी को अलग

ही दिशा में बहा ले जाता है। बेहतर होता, अगर सिरीज बनाने वाले इसके बजाय सस्पेंस और साजिश को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करते । यह वेबसिरीज़ एक ऐसा कानूनी क्राइम ड्रामा है, जिसे आप आसानी से भूल सकते हैं क्योंकि कि इसके खत्म होने के बाद भी इसका आप पर कोई स्थाई प्रभाव नहीं होता है । यह सिरीज़ लेखक आमिर खान के उपन्यास- 'रीता सान्याल के मुकदमे ' पर आधारित है लेकिन यह सिरीज आपके धैर्य की पूरी परीक्षा लेती है।

एक कोर्ट-रूम ड्रामा होने के कारण सिरीज़ में जो गंभीरता होनी चाहिए, वह इसमें गायब है।सिरीज़ का टाइटल 'रीता सान्याल' है। इसमें सान्याल एक बंगाली उपनाम है लेकिन शो में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो इस चरित्र को बंगाल से जोड़ता हो। सिरीज की मुख्य भूमिका निभाने वाली रीता ना तो एक शब्द बंगाली में बोलती है और ना ही उसका रहन-सहन या उसकी संस्कृति में कहीं इसकी झलक है।

अभिनय पक्ष की यदि हम बात करें तो ,अदा शर्मा, केन्द्रीय भूमिका में सहज तो दिखती हैं। लेकिन उनका अभिनय ओसत ही कहा जायेगा ।

सिरीज में कॉमेडी करने की उनकी हर कोशिश बेकार जाती है। ठकराल के रोल में राहुल देव गँभीर और कठोर दिल वाले अंदाज़ में खतरनाक लगते हैं , लेकिन पटकथा के झोल के कारण यह एंटरटेनिंग कानूनी ड्रामा भी सिर्फ एंटरटेनमेंट तक ही सीमित रह गया है और कानूनी ड्रामा कहीं पीछे छूट गया ।

कुल मिलाकर,यह वेबसिरीज़ शौकिया तौर पर बनाया गया कोर्ट रूम-थ्रिलर है, जिसके अभी तक प्रदर्शित पहले दो एपीसोड देखकर आप तय कर सकते हैं कि इस पर समय खर्च करना है या नहीं ? निर्माता -निर्देशक ने रीता सान्याल नाम के चरित्र को कोर्टरूम ड्रामे के जॉनर में एक नए चेहरे के तौर पर स्थापित करने की अच्छी कोशिश की है लेकिन बेहतर होगा कि आप इस सीरीज को सिर्फ मनोरंजन के लिहाज से ही देखें।

गुरुनानक देवजी के प्रकाश पर्व पर गंज में निकली प्रभात फेरी

बैतूल। श्री गुरु नानक देव जी के 555वें गुरपूरब के उपलक्ष्य में आयोजित प्रभात फेरी के सातवें दिन श्रद्धा और भक्ति का माहौल देखने को मिला। प्रभात फेरी का आयोजन सुबह 5 बजे गुरुद्वारा साहिब से प्रारंभ हुआ,

जिसमें बडी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। प्रभात फेरी के दौरान कीर्तन और अरदास की मधुर ध्वनि से वातावरण भक्तिमय हो गया। संगत के बीच गुरु की बाणी का सुमधुर कीर्तन हुआ, जिससे सभी श्रद्धालु आनंदित हुए। फेरी गंज क्षेत्र में पहुंचने पर श्रद्धालुओं का स्वागत किया गया। प्रभात फेरी का गंज में बापू की कचौड़ी प्रतिष्ठा के संचालक नरेंद्र अरोरा और कुशकुंज अरोरा एवं उनके परिवार ने श्रद्धालुओं का स्वागत किया। संगत में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने गुरु के प्रति अपनी आस्था प्रकट की और समाज में भाईचारे एवं एकता का संदेश फैलाने का संकल्प लिया। प्रत्येक दिन प्रभात फेरी के माध्यम से गुरु नानक देव जी के उपदेश और उनकी शिक्षा का प्रचार हो रहा है।

पांच दिन से लापता युवक का नदी में मिला शव

बैतूल। पांच दिन से लापता युवक का शव शनिवार को माचना नदी में मिला। सूचना मिलते ही पुलिस और एसडीईआरएफ का दल मौके पर पहुंचा और युवक के शव को बाहर निकाला। फिलहाल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। टीआई रविकांत डेहरिया के मुताबिक अर्जुन नगर निवासी 26 वर्षीय युवक बिट्टू अजय पिता नंदू 4 नवंबर से लापता था। उसकी 5 नवंबर को परिजनों ने गुमशुदगी दर्ज करवाई थी। शनिवार को सूचना मिली कि माचना नदी में मलकापुर रोड पुल के पास पानी में शव दिखाई दे रहा है। पुलिस और एसडीईआरएफ का दल मौके पर पहुंचा और शव को बाहर निकाला। टीआई रविकांत डेहरिया के मुताबिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के कारण स्पष्ट हो पाएंगे। परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। इस एंगल को लेकर भी पुलिस जांच कर रही है। मृतक के पुराने रिकार्ड भी तलाश किए जा रहे हैं। मृतक के बड़े भाई ने बताया कि सोमवार की शाम को उसका भाई घर से निकला था, वापस नहीं आने पर उसकी तलाश कर रहे थे।

घर में फंदे पर लटका मिला युवक का शव

बैतूल। एक युवक ने अपने ही घर में अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगा ली। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। टीआई रविकांत डहरिया के मुताबिक रात करीब 11 बजे पुलिस को सूचना दी कि किसी ने अर्जुन नगर में फांसी लगा ली है। मौके पर पहुंचे पुलिस दल ने जांच शुरू की तो पता चला कि मृतक दिनेश वाड़िवा (35) अर्जुन नगर ने अपने ही घर में साड़ी का फंदा बनाकर खुदकुशी कर ली। घटना के समय घर में बुजुर्ग पिता और भाभी थी। बुजुर्ग पिता टॉयलेट करने के लिए उठे तब उन्होंने दिनेश को कमरे में फंदे से लटका देखा और बहू को बुलाया। बहू ने आसपास के लोगों को तुरंत बुलाकर घटना की जानकारी दी। वार्ड वासियों ने गंज थाना पुलिस को लगभग 11 बजे सूचना दी। गंज थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और फांसी के फंदे से युवक को उतार कर पोस्टमॉर्टम के लिए बैतूल जिला चिकित्सालय पहुंचाया। फिलहाल युवक ने किन कारणों से आत्महत्या की है, अभी इसकी जानकारी सामने नहीं आई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सडक़ हादसे में ढाई के मासूम की मौत, पिता घायल

बैतूल। सडक़ हादसे में एक ढाई साल के मासूम की मौत हो गई, वहीं पिता घायल है। शनिवार को मासूम के शव को पोस्टर्माटम कर परिजनों को सौंपा दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मोहदा में रहने वाला रविशंकर शुक्रवार अपनी महतपुर स्थित ससुराल से ढाई साल के बेटे श्रेयांस को बाइक से लेकर घर लौट रहा था, इसी बीच ताप्ती पुल पर उस की बाइक को किसी ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि ढाई साल का मासूम बाइक से उछलकर दूर जा गिरा। इस हादसे में रविशंकर भी घायल हो गया। राहगीरों ने दोनों पिता पुत्र को अस्पताल पहुंचाया। पिता को घटना में मामूली चोट आई है। जबकि बालक को गंभीर चोट के बाद भीमपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से जिला अस्पताल भेजा गया था, लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को मॉर्चुरी में रखवाया है, पीएम करवाकर शव परिजनों को सौंपा जा रहा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

युवाओं ने मतदाता सूची में नाम जोडऩे की प्रक्रिया को समझा, मतदाता जागरूकता कार्यशाला संपन्न

बैतूल। प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस जेएच कॉलेज में मतदाता सूची में नवीन मतदाताओं के नाम जोडऩे के लिए कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यशाला प्राचार्य डॉ.मीनाक्षी चौबे के संरक्षण में स्वीप के जिला सहायक नोडल अधिकारी एवं एनएसएस जिला संगठक डॉ सुखदेव डोंगरे, वाणिज्य विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ.राजेश शेषकर डॉ.दशरथ मीणा, प्रो.आयुष कुमार, निलेश पाटिल की उपस्थिति में आयोजित की गई थी। जिसमें 150 विद्यार्थियों को जो 18 वर्ष पूर्ण करने वाले हैं मतदाता परिचय पत्र बनाने की समझाइए दी। इस मौके पर डॉ.सुखदेव डोंगरे ने कहा कि युवाओं में प्रथम बार मतदान को लेकर उत्साह होता है परन्तु उसके लिए जरूरी है कि मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाएं तभी वह अपने अधिकार का उपयोग कर सकेंगे। कार्यशाला में छात्र-छात्राओं ने मतदाता सूची में नाम जोडऩे की पूर्ण प्रक्रिया को समझा। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विद्यार्थीगण मौजूद थे।

ट्रॉफिक के अनुरूप नहीं बन रही सड़कें, इसलिए जल्द हो रही खराब

सडक़ों पर गड्ढों से जनता परेशान, पेंचवर्क में भी हो रही लापरवाही

संजय द्विवेदी, बैतूल।

सडकों को लेकर जनता की परेशानी खत्म नहीं हो रही है। सडकों पर जगह-जगह गड्ढे हो गये है। लगातार आवागमन से इन सडक़ों पर गड्ढों का आकार बढ़ता जा रहा है और सडके बदहाल होती जा रही है। यह स्थिति शहर की एक सडक की नही, अपितु अधिकांश सडकों की हालत ऐसी ही है। हालांकि कुछ सडक़ों को सुधार जरूर किया गया है, लेकिन पेंचवर्क में लापरवाही के कारण गिट्टी सडक़ पर बिखर गई। लोगों का कहना है कि गड्ढों में तबदील हो चुकी सडकें वाहनों की दुर्दशा तो कर ही रही हैं, साथ ही लोगों के शरीर व स्वास्थ्य पर भी बुरा असर कर रहीं हैं। कुछ स्थानों पर तो सडक अंदर की तरफ धंस रही है, तो कहीं-कहीं पर सडक का डामर बारिश से उखड़ गया है। जिससे गड्ढे बन गये है। जिससे वाहन चालकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गौरतलब रहे कि शहर की इन प्रमुख सडकों पर रोजाना सैकड़ों वाहनों का आना-जाना लगा रहता है। दिन में तो वाहन चालक जैसे-तैसे सडक के गड्ढों से बच भी जाते है, किन्तु रात्रि में गड्ढे नजर नहीं आने से कई बार गिरकर चोटिल हो चुके है।

इन सड़कों की हालत सबसे ज्यादा खराब

शहर के लल्ली चौक से लेकर कोतवाली चौक और गंज गुरूद्वारा रोड के अलावा कई सडक़ों की हालत खराब है। गंज में हाथी नाले के पास भी सडक़ पर गड्ढे है, जिसमें हमेशा पानी थमा रहता है। गुरुद्वारा रोड से पीडब्ल्यूडी चौक तक सडक़ पर पेचवर्क किया था, लेकिन पेंचवर्क भी उखडऩे लगा है। सडक़ पर गिट्टी फैल रही है। जिससे दोपहिया वाहनों के स्लीप होने की घटनाएं में वृद्धि होने लगी है। इस रोड पर वाहन चालक जरा भी लापरवाही करते तो उसका वाहन सहित गिरना तय है। दूसरी तरफ बीजेपी भवन के सामने भी पेचवर्क उखडऩे लगा है। यहां भी पहले पेंचवर्क किया जा चुका है, लेकिन बारिश में सडक़ उखड़ गई थी। जो सीधे-सीधे गुणवत्ताविहिन कार्यो की ओर इशारा कर रहा है।

खराब सडक़ों को लेकर कांग्रेस कर चुकी है विरोध प्रदर्शन ....

शहर की खराब सडक़ों को लेकर कांग्रेस कमेटी विरोध प्रदर्शन कर चुकी है। कांग्रेस ने कुछ समय पहले ही सडक़ों पर गड्ढों में विरोध स्वरूप बेशर्म के पौधे लगाकर प्रदर्शन किया था। वहीं पूर्व विधायक निलय डागा भी खराब सडक़ो को लेकर सवाल उठा चुके है।

कांग्रेस नेता एवं पूर्व विधायक निलय डागा का आरोप था कि भाजपा के राज में शहर की सडक़ों की स्थिति अत्यंत जर्जर हो गई है। जिसका परिणाम आमजनता धूल-मिट्टी से भरपूर सडक़ों पर चलने को मजबूर है। पूर्व विधायक का कहना था कि गंज, कोठी बाजार में उखड़े हुए पेंचवर्क और गड्ढो से भरी सडक़ो पर लोगों का चलना मुश्किल हो गया है।

ट्रॉफिक के अनुरूप नहीं बनती सडक़े, परिणाम जल्द खराब ....

शहर की सडक़ों के जल्द खराब होने के पीछे जिम्मेदारों की अनदेखी भी एक कारण है। जागरूक नागरिकों की माने तो अधिकारी दफ्तरों में ही सडक़े के ट्रॉफिक का आंकलन करते है और इसी आंकलन के अनुरूप सडक़ो का निर्माण होता है, जबकि शहर में आबादी के साथ वाहनों का दबाव निरंतर बढ़ रहा है। स्थिति यह है कि जितने ट्रॉफिक के हिसाब से सडकों को डिजाइन किया गया है, वाहनों की संख्या उससे कई गुना तक हो चुकी है। इस स्थिति में सडकें हांफने लगती हैं और कुछ ही समय में सडक़ो का दम निकल जाता है। भारी ट्रैफिक कोठीबाजार, गंज और गुरूद्वारा रोड की सडक़ों की नियति बन चुका है। लेकिन जो सडक़ बन रही है, वह आज भी पहले के ट्रॉफिक के अनुसार बनती है। पेंचवर्क कार्य में भी यहीं हालात है। जिससे सडक़ें जल्द उखडक़र बिखर रही है।

इनका कहना

पेंचवर्क के संबंध में मेरी एई और ठेकेदार से चर्चा हुई थी, चूंकि पहली लेयर में कच्ची सडक़ बनती है, इसलिए गिट्टी व डामर उखडक़र बिखर रहा है। जिसे बाद की लेयर में प्रॉपर तरीके से पूर्ण किया जायेगा। रही बात शहर की अन्य सडक़ों की, जहां बारिश के दौरान गड्ढे हो गये है, मैं कल खुद फील्ड पर जाकर वस्तुस्थिति का जायजा लूंगा और शीघ्र ही प्लानिंग बनाकर सडक़ों को ठीक किया जायेगा।

सतीश मटसेनिया, मुख्य नगरपालिका अधिकारी, नपा बैतूल

भगवान सहस्त्रबाहु जन्मोत्सव में सेवा सम्मान और संस्कृति का दिखा संगम

विधायक ने मूर्ति स्थापना और समाज कल्याण के लिए 10 लाख सहयोग राशि की घोषणा

बैतूल। भारतीय सनातनी संस्कृति की गहरी आस्था को समर्पित करते हुए, कलचुरी कलार समाज बैतूल ने राजराजेश्वर भगवान सहस्त्रबाहु का भव्य जन्मोत्सव समारोह आयोजित किया। यह समारोह टिकारी स्थित कलार समाज मंगल भवन में संपन्न हुआ, जिसमें जिले के विभिन्न विकासखंडों और अन्य क्षेत्रों से समस्त समाज बंधु श्रद्धा और उत्साह के साथ उपस्थित रहे। धार्मिक परंपराओं का पालन करते हुए कार्यक्रम का आयोजन विधिवत हवन, पूजन और महाआरती के साथ किया गया। इस विशेष आयोजन के मुख्य अतिथि बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल रहे, जिन्होंने भगवान सहस्त्रबाहु की पूजा अर्चना की। उनके साथ विशेष अतिथि के रूप में आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे और महिला जिला अध्यक्ष बिंदु केके मालवीय भी शामिल हुईं। समाज के अध्यक्ष तपन मालवीय की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने अपने उद्बोधन में सहस्त्रबाहु भगवान की मूर्ति स्थापना के प्रति गहरी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की आर्थिक कमी आड़े नहीं आने दी जाएगी। खंडेलवाल ने समाज के प्रति अपने पुराने और मजबूत संबंधों का जिक्र करते हुए भरोसा दिलाया कि भगवान सहस्त्रबाहु की भव्य प्रतिमा की स्थापना में हर संभव योगदान दिया जाएगा। उन्होंने मूर्ति स्थापना और समाज कल्याण के लिए 10 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा करते हुए कहा कि कलार समाज के विकास के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। खंडेलवाल ने समाज के अच्छे कार्यों और संगठित प्रयासों की सराहना की, साथ ही विश्वास दिलाया कि वे समाज के हर अच्छे निर्णय में सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि यह उनके लिए गर्व की बात है कि वे इस पुण्य कार्य में अपना योगदान दे पा रहे हैं, और आगे भी समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहेंगे।

न्यायोत्सव विधिक सेवा सप्ताह, पुलिस ने आमजनों को किया जागरूक

बैतूल। न्यायोत्सव पर आयोजित विधिक सेवा सप्ताह अंतर्गत एक विशेष विधिक जागरूकता प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। आयोजन में विभिन्न सरकारी विभागों ने सक्रिय भागीदारी की, जिसमें पुलिस विभाग की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। पुलिस विभाग द्वारा साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव, साइबर अपराधों की पहचान, डिजिटल सुरक्षा के महत्वपूर्ण टिप्स, सोशल मीडिया का सुरक्षित उपयोग सहित महिला सुरक्षा एवं अपराध रोकथाम, महिला सशक्तिकरण, कानूनी अधिकारों की जानकारी, आपातकालीन हेल्पलाइन नंबर और त्वरित सहायता प्रणाली के बारे में बताया। यातायात नियम जागरूकता के तहत सडक़ सुरक्षा नियम, दुर्घटना रोकथाम उपाय, यातायात संकेतों की जानकारी और ट्रैफिक नियमों का महत्व के बारे में जानकारी दी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें विभिन्न प्रकार के अपराधों से बचाव की जानकारी प्रदान करना है। प्रदर्शनी में शामिल छात्र छात्राओं ने बताया कि यह प्रदर्शनी न केवल जागरूकता बढ़ाने में सहायक है, बल्कि लोगों को अपनी कानूनी समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध विभिन्न विधिक सेवाओं से भी अवगत कराती है।

तारा स्कूल में जीवन कौशल भाग एक का आयोजन

बैतूल/शाहपुर। विकासखंड के अंतर्गत तारा संकुल के तारा हाई स्कूल मैदान पर जीवन कौशल भाग एक का आयोजन किया गया। जिसमें संकुल के अंतर्गत आने वाले स्कूलों के बच्चों के द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी भी लगाई गई। खेलों का आयोजन भी किया गया। जिसमें क्रिकेट, कबड्डी, वालीबाल,आदि भी छात्र-छात्राओं के द्वारा खेलों में भाग लिया गया।

बारी बरई समाज का युवक युवती परिचय सम्मेलन आज

बैतूल। बारी बरई समाज संगठन के तत्वावधान में आज रविवार प्रात-10.30 बजे से केसर बाग में समाज के युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन और पुस्तिका का विमोचन किया जाएगा। संगठन के अध्यक्ष गुलबराव पोटे ने बताया कि कार्यक्रम बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के आतिथ्य में संपन्न किया जाएगा। मीडिया प्रभारी कमलेश भोपले ने बताया कि इस मौके पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे।

गोपाष्टमी पर गौ माताओं का किया पूजन, गौ सेवकों का सम्मान

बैतूल। भारत भारती गौशाला में गोपाष्टमी पर सैंकड़ों गौ माताओं का पूजन किया। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने गायों की विधिवत आरती कर उन्हें गोग्रास दिया। अतिथियों ने यहां बनी गौशाला में पहुंचकर गौसेवा भी की। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में जनजाति शिक्षा के राष्ट्रीय सह संयोजक बुधपाल सिंह ठाकुर, विद्या भारती के प्रान्त सह संगठन मंत्री अनिल अग्रवाल, जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष एवं भारत भारती शिक्षा समिति के सचिव मोहन नागर, समिति के कोषाध्यक्ष मुकेश खंडेलवाल, नगर के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ कैलाश वर्मा, विद्यालय के अभिभावक और उन्नत कृषक श्यामराव बारंगे ने गौशाला की वंशी गाय की पूजा की । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारत भारती के सचिव मोहन नागर ने कहा कि गाय भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है। अगर गाय समाप्त हुई तो अनेक जीव श्रृंखलाएं समाप्त हो जाएगी। वर्तमान समय में भारत जैसे कृषि प्रधान देश जिसमें एक समय गाय को घर का धन माना जाता था, आज गौ वंश उपेक्षित हो रहा है। खेतों में उनके चारे को जला दिया जा रहा है, क्योंकि घरों में गाय है ही नहीं। ये कृत्य जैव विविधता को नुकसान पहुंचा रहा है। वैज्ञानिक रूप से भी देखा जाए तो आहार श्रृंखला का बहुत महत्व है। हमें इसका संरक्षण करना होगा और इसके लिए दोबारा गौ पालन की ओर लौटना होगा। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की छात्रा भूमिका बारंगे ने किया।

संघर्षपूर्ण मुकाबले में डॉक्टर 11 ने बनाई फाइनल में जगह

आज व्यापारी 11 से होगा खिताबी मुकाबला

बैतूल। लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम कोठी बाजार में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रदर्शन और संघर्ष की मिसाल पेश करते हुए डॉक्टर 11 ने सेमीफाइनल मुकाबले में पुलिस 11 को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने उतरी डॉक्टर 11 ने पुलिस 11 को 20 ओवर में 9 विकेट पर 136 रनों पर रोक दिया। पुलिस 11 की ओर से आदर्श दुबे ने 12 चौकों की मदद से 53 रन बनाए, जबकि मंगलेश ने 21, मनोज दहीकर ने 18 और अजय ने 15 रनों का योगदान दिया। डॉक्टर 11 की ओर से रुद्र और राहुल ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए क्रमश- 22 और 20 रन देकर तीन-तीन विकेट लिए। इसके अतिरिक्त सचिन, आकाश यादव और डॉक्टर किशोर ने एक-एक विकेट हासिल किया। 137 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी डॉक्टर 11 की शुरुआत खराब रही, जब चार रन पर पहला विकेट गिर गया। इसके बाद दूसरा विकेट 36 और तीसरा विकेट 49 रनों पर गिरा, जिससे टीम दबाव में आ गई। लेकिन ओपनर साहिल कवड़े और आकाश यादव ने संघर्षपूर्ण बल्लेबाजी करते हुए टीम को संभाला। साहिल ने नाबाद 52 रन बनाए, वहीं आकाश ने 44 रनों का महत्वपूर्ण योगदान दिया। दोनों के बीच शानदार साझेदारी ने टीम को 112 रन तक पहुंचाया, जिससे डॉक्टर 11 की जीत की संभावनाएं बढ़ गईं। हालांकि, पांचवें विकेट के गिरने से खेल का रुख बदलता नजर आया, लेकिन डॉक्टर दीप कुमार साहू ने संयम से खेलते हुए टीम को जीत दिलाई। दूसरे सेमीफाइनल में व्यापारी 11 और शिक्षक 11 के बीच मुकाबला अपेक्षाकृत एकतरफा रहा। शिक्षक 11 ने कुल 125 रन बनाए, जिसमें लोकेश सयाने के 25, मोइस मंसूरी के 21 और अभिमन्यु के 28 रन शामिल थे। शिक्षक 11 की ओर से लगातार 11 कैच छोड़े गए, जिसमें से आठ कैच मैन ऑफ द मैच और शतकवीर निखिल रघुवंशी के थे, जिससे टीम का प्रदर्शन कमजोर पड़ा। व्यापारी 11 ने इस लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया, जिसमें हरप्रीत सिंह ने एकमात्र विकेट खोया। संगठन के अध्यक्ष ने जानकारी दी कि फाइनल मुकाबला आज रविवार, 10 नवंबर को डॉक्टर 11 और व्यापारी 11 के बीच खेला जाएगा। मैच के दौरान नगर पालिका सीएमओ सतीश मटसेनिया ने खिलाडिय़ों से परिचय प्राप्त किया। आयोजन में संगठन के उपाध्यक्ष प्रवीण गर्ग, राजू देशमुख, चंद्रभान बारस्कर सहित बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद रहे, जिन्होंने खिलाडिय़ों का उत्साहवर्धन किया।

मतदान केन्द्रों का निरीक्षण, निर्वाचन नामावली का अंतिम प्रकाशन 6 जनवरी को

सुबह सवेरे सोहागपुर ।आज सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं तहसीलदार राकेश खजूरिया, प्रोग्रामर अमित मिश्रा आदि ने मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। इसके अलावा वार्डो में घर घर जाकर जानकारी ली। उल्लेखनीय

है कि 29 अक्टूबर से दावे एवं आपत्तियां दर्ज करने की अवधि से लेकर 28 नवंबर 2024 होगी। विशेष कैंपों की आज से 10 नवंबर.2024 दिन रविवार एवं 16 नवंबर शनिवार एवं 17 नवंबर.2024 दिन रविवार को लगाए जाएंगे। निर्वाचन नामावली का अंतिम प्रकाशन 6 जनवरी 2025 दिन सोमवार को किया जाएगा ।

आयुष चिकित्सा शिविर में 408 नागरिकों ने लिया लाभ

जिला न्यायालय परिसर में आयोजित हुआ नि :शुल्क शिविर

बैतूल। विधिक सेवा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विधिक सेवा सप्ताह के अंतर्गत 9 नवंबर को जिला न्यायालय परिसर में नि:शुल्क आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में नागरिकों को निशुल्क चिकित्सा परामर्श और आयुष चिकित्सा पद्धतियों की विस्तृत जानकारी दी गई। शिविर का आयोजन जिला कलेक्टर के मार्गदर्शन और जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर के निर्देशन में किया गया, जिसमें आयुर्वेद और होम्योपैथी विधियों के माध्यम से कुल 408 नागरिकों ने लाभ उठाया। इस शिविर का शुभारंभ प्रधान जिला न्यायाधीश प्राणेश कुमार द्वारा किया गया, और इसके आयोजन की देखरेख जिला न्यायाधीश-सचिव डॉ. कु. महजबीन खान द्वारा की गई। इस अवसर पर 250 आयुर्वेद और 158 होम्योपैथी रोगियों का निशुल्क चिकित्सा परामर्श और औषधियों का वितरण किया गया। शिविर में उच्चरक्तचाप, रक्ताल्पता, वातरोग, मधुमेह, जोड़ों में दर्द, त्वचा रोग, नाक, कान, गला, एवं दंतरोग जैसी बीमारियों का उपचार किया गया। कार्यक्रम के दौरान शिविर में डॉ. विजय तांडिलकर और डॉ. लक्ष्मी किशनानी को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया, जिनकी देखरेख में योग, श्री अन्न, पंचकर्म, और नवग्रह वाटिका औषधि पौधों से संबंधित जानकारी भी नागरिकों को दी गई। साथ ही वैद्य आपके द्वार योजना के अंतर्गत आयुष क्योर की जानकारी उपलब्ध कराई गई, ताकि नागरिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूक हो सकें। शिविर में उपस्थित चिकित्सा अधिकारियों में डॉ. नरेन्द्र डढोरे, डॉ. नितिन अतुलकर, डॉ. भावना पाटिल (आयुर्वेद), डॉ. प्रियंका अहिरवार, डॉ. अभयदेव इवने (होम्योपैथी) और डॉ. ललिता धाकड़े, डॉ. नैनसी राठौर, डॉ. युवराज सूर्यवंशी सी.ए.एम.ओ. प्रमुख थे। सभी चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ ने अपनी सेवाएं देकर नागरिकों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई।

बड़े पर्दे पर लौटेगी अभिषेक और ऐश्वर्या की जोड़ी

फिल्म इंडस्ट्री में ऐश्वर्या राय और अभिषेक बच्चन के तलाक की चर्चा गरम है। माना जा रहा है कि ऐश्वर्या और अभिषेक अब साथ नहीं हैं। ऐश्वर्या राय बच्चन के बर्थडे पर अभिषेक बच्चन के परिवार ने किसी तरह की पोस्ट शेयर नहीं की। परिवार की इस हरकत ने ऐश्वर्या राय बच्चन और अभिषेक बच्चन के रिश्ते पर शक और गहरा दिया। लोगों को यकीन हो गया कि ऐश्वर्या और अभिषेक का तलाक हो रहा है। इस बीच ऐश्वर्या राय बच्चन और अभिषेक बच्चन को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही।

मिल रही जानकारी के मुताबिक, जल्द ही ऐश्वर्या और अभिषेक की एक साथ-साथ फिल्म आने वाली है। ऐश्वर्या राय और अभिषेक बच्चन को साथ लाने की जिम्मेदारी मणिरत्नम ने ली है। मणिरत्नम दोनों को लेकर फिल्म बनाने के बारे में सोच रहे हैं। मणिरत्नम के पास एक ऐसी कहानी है जिसके लिए ऐश्वर्या राय बच्चन और अभिषेक बच्चन की जोड़ी परफेक्ट बैठेगी।

अभिषेक और ऐश्वर्या के बारे में कहा तो यह भी जा रहा है कि अभिषेक और ऐश्वर्या के रिश्ते में निम्रत कौर की वजह से दरार आई। तलाक की इन खबरों पर अभी तक बॉलीवुड के इस कपल का कोई रिएक्शन नहीं आया।

इस बीच अभिषेक बच्चन ने अपनी अपकमिंग फिल्म का पोस्टर शेयर करते हुए क्रिप्टिक पोस्ट लिखा है। शूजित सरकार के निर्देशन में बनी इस फिल्म का नाम 'आई वांट टू टॉक' है।

इस पोस्टर में अभिषेक बिना कपड़ों के खड़े हैं और निकला हुआ पेट दिखा रहे हैं। अभिषेक

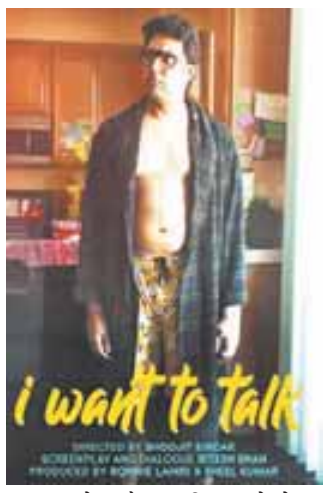

एक इस पोस्ट के बाद फिल्म को लेकर दर्शकों की उत्सुकता बढ़ गई। अभिषेक बच्चन ने अपनी अपकमिंग फिल्म 'आई वांट टू टॉक' का पोस्ट शेयर करते हुए लिखा 'बोलने को तो बहुत कुछ है लेकिन फिर, एक तस्वीर हजारों शब्द बोलती है। पोस्ट के साथ ही अभिषेक ने मूवी की रिलीज डेट भी अनाउंस की है। एक्टर ने अपने कैप्शन में बताया कि यह फिल्म अगले महीने 22 नवंबर को रिलीज होगी। अभिषेक की इस पोस्ट पर लोग कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं।

'भूल भुलैया-4' में अक्षय-कियारा की वापसी

कार्तिक आर्यन और तृप्ति डिमरी की फिल्म 'भूल भुलैया-3' सिनेमाघरों में धमाल मचा रही है। ये फिल्म दिवाली के मौके पर दर्शकों के बीच आई और छा गई। इस फिल्म ने अपने पहले वीकेंड पर ही 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया था और अब तक इस फिल्म की कमाई 140 करोड़ के पार हो गया। इस फिल्म को देखने के बाद ही फैंस के बीच तुरंत ही फ्रेंचाइजी के चौथे पार्ट की चर्चा शुरू हो गई। दर्शक अब 'भूल भुलैया 4' की डिमांड कर रहे हैं, जिस पर मेकर्स ने बड़ा अपडेट दिया। फिल्म के अगले पार्ट में अक्षय कुमार और कियारा आडवाणी की एंट्री की बात हो रही है।

भूल भुलैया-3 को लेकर पहले कहा जा रहा था कि फिल्म में अक्षय कुमार और कियारा आडवाणी का कैमियो हो सकता है। लेकिन, जब फिल्म सिनेमाघरों में रिलीज हुई तो फैंस के हाथ सिर्फ निराशा लगी। इस फिल्म में अक्षय और कियारा का कैमियो नहीं है, इसी वजह से फैंस अब ये सवाल उठा रहे हैं कि क्या फिल्म के चौथे पार्ट में कियारा आडवाणी और अक्षय कुमार को लिया जाएगा। इस बारे में फिल्म के

निर्माता भूषण कुमार से एक इंटरव्यू में सवाल किया गया। उन्होंने संकेत दिए कि फिल्म में इन दोनों कलाकारों की एंट्री हो सकती है।

भूषण कुमार ने कहा कि अब वह एक मजबूत कहानी का इंतजार कर रहे हैं। पुराने कलाकारों को लाने के लिए एक अच्छी कहानी होनी चाहिए। अब सब कुछ कहानी पर निर्भर करता है। सभी कलाकारों को एक साथ लाना तभी समझ में आता है, जब कोई ठोस कहानी आपके पास हो।

उन्होंने यह भी कहा कि वे 'भूल भुलैया 4' की कहानी को बनाने के लिए इन चीजों को ध्यान में जरूर रखेंगे। भूषण कुमार के इस इंटरव्यू से माना जा रहा है कि फिल्म में अक्षय कुमार की एंट्री हो सकती है। इससे पहले फिल्म डायरेक्टर अनीस बज्मी ने यह कहा था कि चौथे पार्ट में कार्तिक आर्यन और अक्षय कुमार को साथ में लाने की कोशिश होगी। उन्होंने अपने बयान को ऑफिशियली अनाउंसमेंट नहीं बताया था।

रियल बॉक्स

मनोरंजन के मसाले में काले धंधे का तड़का

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

फिल्म इंडस्ट्री से अंडरवर्ल्ड का रिश्ता बहुत पुराना और गहरा रहा है। क्योंकि, जहां पैसा और ग्लैमर है वहां इस काले धंधे का दखल है। अपराध की इस दुनिया का दखल सिर्फ फिल्मों में काले पैसे लगाने और कमाने तक सीमित नहीं है। फिल्म की कास्टिंग से लेकर उसके गीत-संगीत और ओवरसीज राइट्स तक में इनका सीधा दखल रहता था। इसलिए कई कलाकार और संगीतकार भी इनसे नजदीकी बढ़ाते हैं। फिल्म की कहानियों को लेकर भी प्रोड्यूसर और डायरेक्टर इनसे सलाह मशवरा किया करते रहे हैं। क्योंकि, बात पैसे लगाने तक की नहीं, बल्कि एक भय भी व्याप्त रहता था, जो सीधे जान पर आता है। अब वहीं भय इतना बढ़ गया कि सलमान खान जैसे बड़े कलाकार भी कड़ी सुरक्षा के साये में रहने को मजबूर हो गए। 1993 में पहली बार मुंबई ने दाऊद और उसके गुर्गों के आतंक का चेहरा नजदीक से देखा था। मुंबई ब्लास्ट से पहले दाऊद इब्राहिम दुबई में रहकर मुंबई में काले कारोबार पर नजर रखी। इसके बाद फिल्मी दुनिया में भी दाऊद का दबदबा हो गया। अगस्त 1997 में संगीत इंडस्ट्री के कैसेट किंग गुलशन कुमार की हत्या हुई और पहली बार एहसास हुआ कि अंडर वर्ल्ड क्या होता है! गुलशन कुमार को मंदिर में पूजा के बाद गोलियों से भून दिया गया। बाद में खुलासा हुआ कि उनसे फिरौती मांगी गई थी और नहीं देने पर उनकी हत्या कर दी गई।

फिल्म इंडस्ट्री और अंडरवर्ल्ड की नजदीकी की शुरुआत हाजी मस्तान, करीम लाला और सटोरिए रतन खत्री जैसे सरगनाओं से हुई थी। इसमें बाद दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन जैसे कई लोग इससे जुड़ते चले गए। लेकिन, तब ये जुड़ाव फिल्मों में अपना काला पैसा लगाने और फिल्म बनाने तक सीमित था। 90 के दशक की कई फिल्मों में अंडरवर्ल्ड का तो सीधा दखल रहा। जब पुलिस को सबूत मिले, तो कार्रवाई हुई! जिससे पूरी इंडस्ट्री में हलचल मच गई थी। जब फिल्म इंडस्ट्री से दाऊद इब्राहिम का नाम जुड़ा तो उसके साथ काले धंधे में की बुराइयां भी आ गई। लेकिन, 1993 में हुए मुंबई बम कांड के बाद अंडरवर्ल्ड का खौफ कम हो गया। दाऊद दुबई भाग गया, पर उसकी पार्टियों में फ़िल्मी हस्तियों की मौजूदगी बनी रही। कई बड़े कलाकारों के फोटो दाऊद के साथ सुर्ख़ियों में रहे। अंडरवर्ल्ड के दबाव का एक असर अभिनेत्रियों पर कुछ अलग तरह से पड़ा। इस वजह से उनका करियर ही ख़त्म हो गया। क्योंकि, खौफ या आकर्षण के कारण कई अभिनेत्रियां गैंगस्टर्स के चंगुल में आ गई और उनका फ़िल्मी करियर तबाह हो गया।

फिल्म इंडस्ट्री पर कुछ साल पहले भी अंडरवर्ल्ड का खौफ दिखाई दिया था। 90 के दशक में इंडस्ट्री अंडरवर्ल्ड की जकड़ में थी। धमकाने, गोली चलाने और हत्या करके दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन फिल्म इंडस्ट्री पर अपना दबाव बनाने की कोशिश में थे। प्रोड्यूसर करीम मोरानी के घर पर गोली चलाई गई और शाहरुख खान के दफ्तर में फोन करके धमकाया गया। इन वारदातों के पीछे अंडरवर्ल्ड डॉन रवि पुजारी का नाम आया था। शाहरुख़ को धमकी देने के पीछे उनकी एक फिल्म के ओवरसीज राइट्स का मामला सामने आया था। इस वारदात से इंडस्ट्री पर फिर खतरे की घंटी बजने लगी। इससे पहले प्रोड्यूसर राकेश रोशन पर भी जानलेवा हमला हुआ। फरहान अख्तर, सोनू निगम, राम गोपाल वर्मा, प्रोड्यूसर फरहान आजमी और रितेश सिधवानी को भी अलग-अलग समय पर अंडरवर्ल्ड से धमकियां मिलती रही। मुंबई पुलिस कोई जोखिम नहीं लेना चाहती थी, लिहाजा शाहरुख समेत 14 फिल्मी हस्तियों को सुरक्षा देने का फैसला किया गया था। इनमें शामिल रहे सलमान खान, आमिर खान, रितिक रोशन, अक्षय कुमार, सैफ अली खान और करीना कपूर, इमरान हाशमी और विवेक ओबरॉय। फिल्म निर्माता करण जौहर, आदित्य चोपड़ा, बोनी कपूर, फरहान आजमी और रितेश सिधवानी। जबकि, फिल्म डायरेक्टर और एक्टर फरहान अख्तर, गायक सोनू निगम को भी सुरक्षा मिली थी।

अब वही सब सलमान खान के साथ हो रहा है, जिसने 90 के दशक की याद दिला दी। एक नए अंडरवर्ल्ड डॉन लॉरेंस बिश्नोई ने पहले तो सलमान के घर के बाहर गोली चलवाई, फिर उनके जिगरी दोस्त बाबा सिद्दीकी की हत्या करवा दी। इसके बाद सीधे सलमान को धमकी देकर फिरौती मांगी गई। सलमान खान को दी गई धमकी ने सबके होश उड़ा दिए। आखिर सलमान एक्शन हीरो हैं और उनके प्रशंसक उन्हें इसी रूप में देखते हैं। लेकिन, फ़िल्मी बंदूक और असली बंदूक में फर्क होता है। किसी की जिंदगी लेने के लिए एक गोली ही काफी होती है। यही कारण है कि कई अभिनेता सुरक्षा गार्ड के घेरे में रहते हैं। इस पूरे खेल में अंडरवर्ल्ड का कुछ नहीं बिगड़ा। उनके सरगना आराम से किसी छोटे देश में बैठकर अपनी काली सत्ता चला रहे हैं। उनकी बात नहीं मानी जाती तो उनके शूटर गुर्गे किसी को भी गोली मारने को तैयार होते हैं। वे फिल्मों की वीडियो पाइरेसी में शामिल होते हैं और अब ये काले कारोबारी फिल्म के व्यापार का हिस्सा बनना चाहता है। वे फिल्मों के ओवरसीज राइट चाहते थे और ऐसा न करने पर फिर धमकाने से बाज नहीं आते! आजकल चोरी-छुपे यही सब हो रहा।

इंडस्ट्री की कुछ अभिनेत्रियां जैसे ममता कुलकर्णी, मोनिका बेदी, मंदाकिनी, सोना और जैस्मिन धुन्ना अपने समय में चर्चित रहीं। पर, ऐशोआराम के लिए वे काले कारोबारियों के चंगुल में आकर हमेशा के लिए परदे से बेदखल हो गई। इस तरह की प्रेम कहानी सबसे पहले अंडरवर्ल्ड डॉन हाजी मस्तान और अभिनेत्री सोना से शुरू हुई, जो अपने समय काल में खासी चर्चा रही। सोना को उस समय मधुबाला की कॉपी भी माना जाता था। लेकिन, जितनी लोकप्रियता उन्हें फिल्मों से नहीं मिली, उससे ज्यादा वे हाजी मस्तान से जुड़कर चर्चा में आई। दोनों ने शादी कर ली थी। कहते हैं कि फिल्म 'वन्स अपॉन अ टाइम इन मुंबई% में इनकी ही कहानी है। 80 और 90 के दशक की अभिनेत्रियां ममता कुलकर्णी, मंदाकिनी और मोनिका बेदी अपने करियर की ऊंचाइयां चढ़ रही थी, कि उनका नाम अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं से जुड़ गया। बाद में इनमें से कुछ ने लौटने की कोशिश भी की, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। ममता कुलकर्णी को 90 के दशक की लोकप्रिय अभिनेत्री माना जाता था। लेकिन, ममता को ड्रग तस्कर विक्रम गोस्वामी के मोहब्बत हुई। इसके बाद ममता कुलकर्णी ने विक्रम गोस्वामी से शादी कर ली और दोनों दुबई चले गए। ड्रग्स तस्करी में विक्रम के साथ ममता जेल भी जा चुकी हैं।

राज कपूर की फिल्म में काम करना किसी भी अभिनेत्री सपना होता है। मंदाकिनी भी उनमें से एक थी, जो 'राम तेरी गंगा मैली' में काम करके रातों-रात स्टार बन गई थी। लेकिन, वे अपने स्टारडम का मजा ले पाती, इससे पहले वे अपने अंडरवर्ल्ड कनेक्शन की वजह से सुर्ख़ियों में आ गई। मंदाकिनी और दाऊद इब्राहिम की नजदीकी की ख़बरों से हर कोई हैरान था। यहां तक कहा जाता था कि मंदाकिनी को हीरोइन बनाने के लिए निर्माता, निर्देशकों को दाऊद से धमकी तक मिलती थी। इसी तरह मोनिका बेदी अपनी एक्टिंग से ज्यादा अंडरवर्ल्ड डॉन अबू सलेम के साथ अफेयर को लेकर चर्चित रहीं। 'बिग बॉस' और 'झलक दिखला जा' टीवी शो की प्रतियोगी रही मोनिका को अबू सलेम से अफेयर इतना भारी पड़ा, कि उनको भी जेल जाना पड़ा। इससे मोनिका को निजी जिंदगी लाइफ में भी परेशानी उठाना पड़ी। भुतहा फिल्म 'वीराना' (1988) की अभिनेत्री जैस्मिन धुन्ना और दाऊद इब्राहिम के प्रेम की खबरें भी सामने आई थी। लेकिन, उन्होंने परेशान होकर भारत ही छोड़ दिया। दाऊद इब्राहिम का नाम अभिनेत्री अनीता अयूब के साथ भी जुड़ा था। कहा तो यहां तक जाता है कि डायरेक्टर जावेद सिद्दीकी की हत्या में दाऊद इब्राहिम का ही हाथ था। क्योंकि, उन्होंने अनीता को फिल्म में लेने से इंकार कर दिया था, जिसकी कीमत उन्हें जान देकर चुकाना पड़ी।

2002 में राम गोपाल वर्मा की फिल्म 'कंपनी' का कथानक दाऊद इब्राहिम के खतरनाक इरादों पर केंद्रित था। फिल्म ने अंडरवर्ल्ड वॉर को जीवंत तरीके से फिल्माया था। अजय देवगन की भूमिका वाली इस फिल्म ने खासी कमाई की और फिल्मकारों को एक नया आइडिया दे दिया था। अनुराग कश्यप ने 'ब्लैक फ्राइडे' (2004) में दाऊद के किरदार को बेहद खूबसूरती से फिल्माया था। यह फिल्म मुंबई में हुए बम धमाकों और दाऊद इब्राहिम की उसमें भूमिका पर आधारित थी। फिल्म में विजय मौर्या ने दाऊद इब्राहिम की भूमिका की थी। हाजी मस्तान के जीवन पर आधारित मिलन लथूरिया की फिल्म 'वंस अपॉन अ टाइम इन मुंबई' (2010) में अंडरवर्ल्ड की दुनिया को बेहद करीब से दिखाया गया है। इसमें एक अभिनेत्री और हाजी मस्तान के बीच प्रेम संबंध फिल्माए थे। फिल्म में अजय देवगन और कंगना रनौत की मुख्य भूमिका थी। अंडरवर्ल्ड की काली दुनिया पर राज करने वाले डॉन की अच्छाई और उसूलों को भी दिखाया गया। 2013 की फिल्म 'डी डे' में ऋषि कपूर ने अंडरवर्ल्ड डॉन का किरदार निभाया था। निखिल आडवाणी की यह फिल्म काफी पसंद की गई थी। इसमें मुंबई बम धमाकों की खतरनाक झलक देखने को मिलती है। साल 2013 में आई फिल्म 'वन्स अपॉन ए टाइम इन मुंबई अगेन' फिल्म भी अंडरवर्ल्ड पर बनी फिल्मों में एक है। इसमें अक्षय कुमार ने दाऊद जैसा किरदार निभाया था। 2013 की फिल्म 'शूटआउट एट वडाला' भी अंडरवर्ल्ड की ही कहानी थी। फिल्म में जॉन अब्राहम, सोनू सूद और मनोज बाजपेयी थे।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में कई बार छाया 'भाई'

अशोक जोशी

राखी हो या भाई दूज भाई तो हमेशा की तरह इन पर्वों को मनाते रहते हैं। बहनें सज संवरकर इन त्योहारों की खास तैयारी करती हैं। वैसे यह हमारे

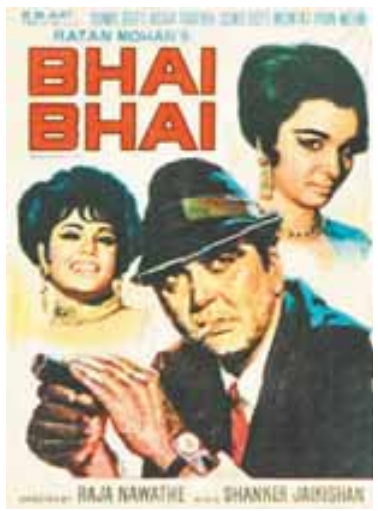

समाज की परम्परा रही है कि हम बहन बेटियों को खास तरजीह देते हैं। लेकिन, इस तरह भाईयों को अनदेखा करना भी उचित नहीं है। इस बार भाई दूज के माहौल में भाइयों पर आधारित फिल्मों और फिल्मी भाईयों की बात कर ली जाए तो क्या हर्ज!

हिंदी सिनेमा में ज्यादातर फिल्में बहनों पर आधारित बनी है, जैसे छोटी बहन, बड़ी बहन और 'मझली दीदी' जैसी फिल्में बनी है, तो भाईयों पर आधारित फिल्में भी कम नहीं हैं। यदि इस तरह की फिल्मों के शीर्ष पर नजर दौड़ाई जाए तो भाई शीर्षक से जुड़ी फिल्मों की संख्या बहन शीर्षक से ज्यादा ही हैं। यकीन नहीं आए तो गिनकर देख लीजिए। भाई, दो भाई, भाई भाई, बड़ा भाई, चल मेरे भाई, मुन्नाभाई एमबीबीएस, लगे रहो मुन्ना भाई, मेरे भैया, बिग ब्रदर, हैलो ब्रदर, गुरु भाई, भाई हो तो ऐसा, मैं और मेरा भाई। फिल्मी गीतों में भी भाइयों ने बहनों की तरह ही अपना जलवा बिखेरा है। इन गीतों में चल मेरे भाई तेरे हाथ जोड़ता हूं। देखो रे हुआ भाई भाई से जुदा, भैया मेरे राखी के बंधन, मेरे भैया मेरे चंदा, चंदा रे भैया से कहना और राखी का मतलब प्यार है भैया प्रमुख हैं। हमारे यहां यदि रागिनी और पद्मिनी से लेकर करीना और करिश्मा जैसी बहनों ने नाम कमाया है तो भाईयों ने भी अभिनय के क्षेत्र में अपना दमखम दिखाया है।

इनमें कुछ भाई सफल तो कुछ असफल रहे हैं। सफल भाइयों में अशोक कुमार और किशोर कुमार हैं तो इनके तीसरे भाई अनुप कुमार ज्यादा चल नहीं पाए। भाइयों में कपूर ब्रदर्स ने बहुत ज्यादा नाम कमाया है चाहे वह राज कपूर, शम्मी कपूर और शशि कपूर हो या ऋषि कपूर और रणधीर कपूर। जरूरी नहीं कि कपूर भाई का होना सफलता की गारंटी ही है। यदि ऐसा होता तो राज कपूर के तीसरे बेटे राजीव कपूर और अनिल कपूर के छोटे भाई संजय कपूर भी सफलता के झंडे गाडते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

कई बार ऐसा भी हुआ है एक भाई के सफल होने पर दूसरा भाई उसी तरह की सफलता की आस लगाए सिने मैदान में कूद पड़ता है

लेकिन, उसे असफलता ही हाथ लगती है। दिलीप कुमार की सफलता से प्रेरित होकर हीरो बने उनके भाई नासिर खान ज्यादा नहीं चल पाए। देव आनंद के भाई विजय आनंद और चेतन आनंद ने कुछ फिल्मों में अभिनय पर हाथ आजमाए लेकिन वह बेहतरीन निर्देशक जरूर बनें लेकिन दूसरे देव आनंद नहीं बन पाए।

सुनील दत्त चाह कर भी अपने भाई सोमदत्त को सफलता का दीदार नहीं करवा पाए। मनोज कुमार अपने भाई राजीव गोस्वामी को अभिनेता बनाने के चक्कर में पारिवारिक कलह में ऐसे फंसे कि उबर नहीं पाए। प्रेमनाथ के साथ उनके भाई राजेन्द्र नाथ तो सफल रहे लेकिन नरेन्द्र नाथ ज्यादा नहीं चल सके। आमिर खान के भाई फैजल खान, फिरोज खान के भाई संजय खान और अकबर खान, और सलमान खान के भाई अरबाज खान और सोहेल खान की कहानी भी कुछ ऐसी ही है।

अभिनय के अलावा दूसरे क्षेत्रों में भी भाईयों ने अपनी किस्मत आजमायी है। गायन में जिस तरह मंगेशकर बहनों का एक छत्र राज्य चलता आया। भाइयों में ऐसी जोड़ी नहीं दिखाई दी। कव्वाली के मैदान में जरूर कुछ भाईयों ने नाम कमाया । संगीत के क्षेत्र में कल्याण जी आनंद जी के बाद जतीन-ललित और आनंद-मिलिंद ने अच्छा नाम कमाया। लेकिन, कोई भी कल्याणजी आनंदजी की तरह लम्बे समय तक नहीं टिक पाए।

निर्देशन के क्षेत्र में आनंद बंधुओं की सफलता का ग्राफ सबसे ज्यादा ऊंचा रहा । चेतन आनंद गंभीर निर्देशन के क्षेत्र में अग्रणी रहे तो विजय आनंद ने मनोरंजक फिल्मों में खूब नाम कमाया। उनकी तरह देव आनंद भी निर्देशक बने लेकिन हरे राम हरे कृष्ण और देस परदेस को छोड़कर तीसरी सफल फिल्म का निर्देशन नहीं कर पाए। संयोग से यह दोनों सफल फिल्में भाई -बहन और भाई भाई के प्रेम पर आधारित थी। वैसे तो राज कपूर के साथ शम्मी कपूर और शशि कपूर ने, रणधीर कपूर के साथ ऋषि और राजीव कपूर, फिरोज खान के साथ संजय खान और अकबर खान ने निर्देशन की परम्परा को आगे बढ़ाया लेकिन इनमें भी एक भाई सफल तो दूसरे भाई असफल रहे। अब्बास मस्तान भाईयों की जोडी जरूर निर्देशन के क्षेत्र में

कुछ हद तक सफल रही।

हिंदी सिनेमा में राकेश रोशन और उनके छोटे भाई राजेश रोशन दोनों ने अपार सफलता पायी लेकिन दोनों के क्षेत्र अलग अलग थे। कुछ कलाकारों ने भाई होने का दायित्व सगा भाई न होने के बाद निभाया है। इनमें लता मंगेशकर सबसे ज्यादा भाग्यशाली है जिन्हें मदन भैया , युसूफ भैया और मुकेश भैया का स्नेह मिला तो सलमान खान ऐसे अभिनेता है जिन्हें बॉलीवुड का भाई कहकर पुकारा जाता है। इसीलिए तो सभी की यही कामना होती है कि भाई हो तो सिनेमाई!

क्या थे, क्या हैं... क्या होंगे अभी !

प्रकाश पुरोहित

'सत्तर के दशक में सिनेमाघर की वजह से कॉलेज में छात्रों की भीड़ यकायक इसलिए बढ़ गई थी कि टिकट पर सरकार रियायत दे रही थी। कॉलेज छात्र को सिर्फ टिकट के ही पैसे देने पड़ते थे, मनोरंजन-कर नहीं लगता था, यानी करीब आधे पैसे में पूरी फिल्म देखने को मिल जाती थी। उन दिनों स्टूडेंट-कंसेशन की अलग से लाइन भी कहीं-कहीं होती थी। सो, टिकट के लिए धूमधाम नहीं करना पड़ती थी और अगर होती भी तो कॉलेज वाले आपस में ही निपटते रहते थे। तब मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज का बोलबाला था, यानी इनके रहते किसी और को टिकट नहीं मिल सकते थे। अगर मेडिकल के चालीस टिकट ले गए तो इंजीनियरिंग के पचास लेने पहुंच जाते थे। सिनेमा के इन रियायती टिकटों के लिए ना जाने कितनी बार दंगे हो गए। बसों के कांच फूटते थे और टॉकीज का भी हुलिया बदलता रहता था। कहते हैं, उस दौरान हर टॉकीज में दो मैनेजर हुआ करते थे कि एक तो अस्पताल में रहता ही था। घर-परिवार मैटिनी शो देखने जाते थे कि नाइट यानी लास्ट-शो में कब शहर की फिजा बदल जाए, कुछ भरोसा नहीं। इन दोनों कॉलेज के हॉस्टल ही सिनेमाई हरकतों के अड्डे हुआ करते थे।

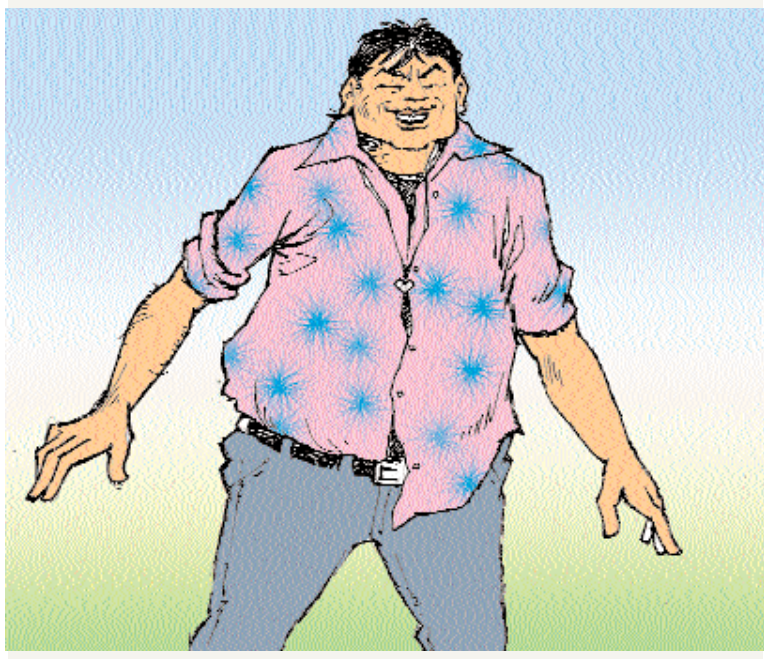

तब कॉलेज में 'डैडी' का स्थायी रिवाज था। ये शख्स सिर्फ कहने को छात्र होते थे, वरना तो छात्रों की उम्र की तो इनकी औलादें होती थीं। ये कभी फेल नहीं होते थे और हर उस विषय में एम.ए. कर डालते थे, जिसकी परिभाषा भी इन्हें कभी पता नहीं होती थी। ये ही सिनेमाघर के रखवाले होते थे और जैसे आजकल दुकानों से प्रोटेक्शन के नाम पर वसूली होती है ना, वैसे टॉकीज भी हर एक के जिम्मे अलग-अलग होते थे। वैसे तो कोई उधर मुंह नहीं मारता था, लेकिन गलती से कोई चला गया तो श्याम और छेनू का 'मेरे अपने' होने में समय नहीं लगता था। उन दिनों सिनेमाघर में अगर स्टूडेंट्स को रियायती टिकट मिलते थे तो आम पब्लिक को ब्लैक में खरीदना होती थी। ये छात्र नेता यानी डैडी ही यह 'बिजनेस' चलाते थे। मैनेजर को ठांस कर रखते थे और मनचाहे टिकट मंगवा लेते थे। मुंह लगे मैनेजर हिस्सेदार भी हो जाते थे। ऐसे भी सबूत हैं कि होनहार छात्र ने सिनेमा के टिकट बेचते इतनी पढ़ाई कर ली यानी डिग्रियां जमा कर लीं कि आगे चल कर यूनिवर्सिटी के कुलपति की कुर्सी तक पहुंच गया। टॉकीज का नाम देख कर अंदाज लगाया जाता था कि किस कॉलेज के ज्यूरिसडिक्शन में आता है।

जिस तरह गैंगवार की खबर आती हैं, कुछ वैसा ही भाईचारा सिनेमा टिकट के लिए इन कॉलेज में होता रहता था। कॉलेज का मुंह भी जिसने कभी नहीं देखा हो, वह भी आइडी कार्ड, किसी भी सीनियर डैडी के इशारे पर बनवा लेता था। आइडी का कारोबार गृह-उद्योग की तरह चलता था। बाकायदा रजिस्टर मेंटेन होते थे और उसमें अवधि नोंद रहती थी। खत्म होने पर अनिवार्य फीस जमा कर रिन्यू भी हो जाया करता था। ये ही फोर्स उस समय काम भी आता था, जब सड़क पर हिसाब बराबर हो रहे होते थे। तब पुलिस के पास सिवाय छात्रों को आपस में लड़ने देने और घायलों को अस्पताल पहुंचाने के कोई दूसरा काम ही नहीं था। आज के बर्बाद ट्रैफिक की वजह भी यही है कि तब पुलिस की नौकरी में यह जिम्मेदारी शामिल ही नहीं की गई थी। तब सिक्का इस कदर भी चलता था कि राम के आइ डी पर श्याम फिल्म देख आता था, जबकि इनमें से एक दाढ़ीदार होता था। इसी तरीके से डबल रोल वाली पहली सफल फिल्म 'राम और श्याम' हर रोज देखने का भी रिकार्ड ना जाने कितनों के नाम है।

तब बाकी जगह यानी रेल, बस में रियायती टिकट का नियम इसलिए नहीं था कि कोई टिकट ही नहीं लेता था। कोई टीटी अगर टिकट मांग ले तो उससे मिलने फिर अस्पताल ही जाते थे लोग। एक बार खंडवा स्टेशन पर टिकट चेकर ने छात्रों से टिकट का पूछ लिया। दो रोज तक पुलिस उसे तलाशती रही कि छात्र उसे गोआ ले गए अपने साथ।

हमारे समय में तो घरों में सोफे का चलन सिटी बस की वजह से ही आया था, क्योंकि सोफासेट की कल्पना सरकारी बस से ही तो मिली थी। एक लंबी सीट पर तीन और बाकी पर एक या दो। वैसे ही चलती रेल से फर्स्ट-क्लास का फर्नीचर घर पहुंचाने का हुनर आते-जाते छात्रों ने सीख लिया था। क्या तो सोफा... टॉयलेट तक का तबादला ऐसी खूबसूरती थऔर फुर्ती से करते थे कि आज 'मूवर्स एंड पैंकर्स' भी क्या करते होंगे।

ये बातें आज इसलिए याद आ रही हैं कि अब छात्रों के लिए सिनेमाघर में ऐसी कोई रियायत नहीं है। सुन कर अचरज हुआ कि इंदौर नगर निगम ने सिटी बस में रियायती टिकट चला रखे हैं। हमारे समय में तो कंडक्टर को कोई काम निकल आता था तो छात्र ही बस को यहां से वहां दौड़ाते रहते थे और शाम को पूरे पैसे सहित चार्ज सौंपते थे। परिचालक तो बॉडी-लैंग्वेज से ही समझ जाते थे कि टिकट का पूछा तो धुलाई तो होगी ही, डिपो तक पैदल भी जाना पड़ सकता है। ये कैसे लड़के हैं आजकल के, जो टिकट खरीद कर सफर करते हैं।

वो वादे निभाए गए क्या?

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

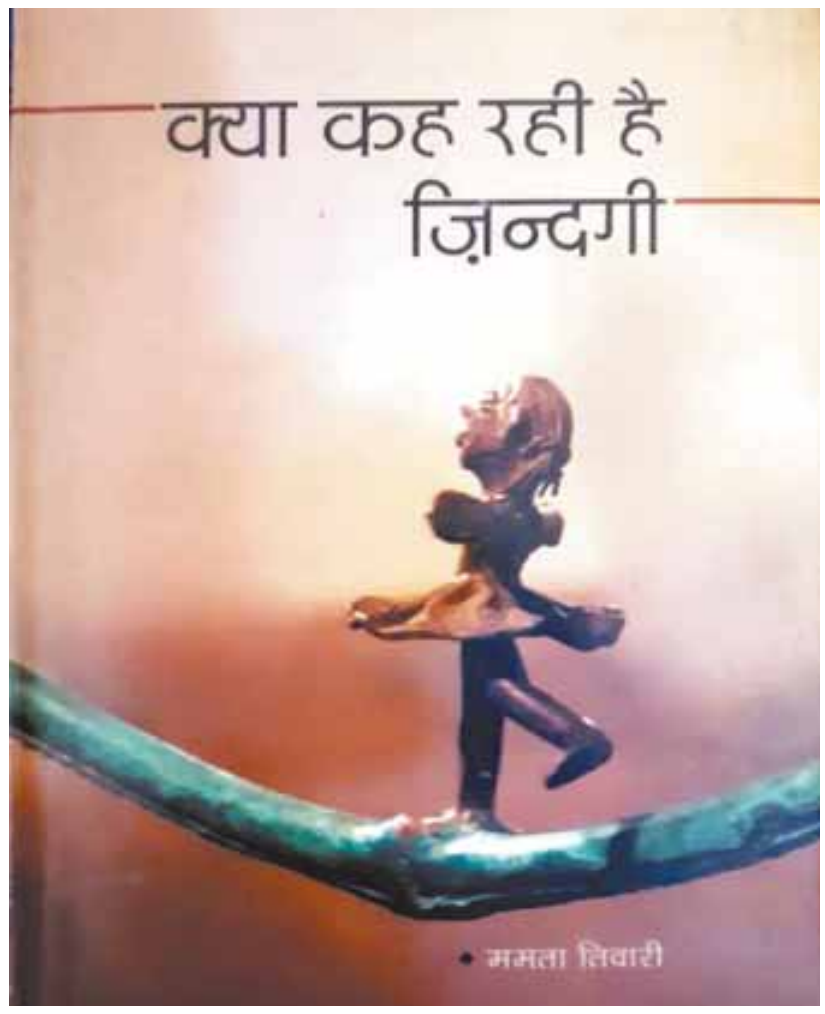

ना कितना खुश होते है हम, जब दूसरों से किये गये वादे पूरे करते हैं। खुद को ईमानदार महसूस करते हैं। दिल में संतुष्टि होती है कि हम जो वादे दूसरो से करते हैं उन्हें समय पर पूरा करते हैं। अरे! ये तो बहुत छोटी बात है वादा पूरा करना। अच्छा तो मैंने महसूस किया, मैं ऐसा करती हूं और ऐसा करके प्रसन्न भी होती हूं पर काफी थकी सी रहती हूँ क्योंकि जो मैंने खुद से वादे किये, वे कभी ईमानदारी से निभाये नहीं। इसीलिये जिंदगी में खलबली सी मची रहती है। बात छोटी सी है। मैं अपनी वादाखिलाफ़ी की बातें लिख रही हूँ पर जहां तक आप का सवाल है काफी लोग आप में से मेरी बात पे इत्तेफाक रखेंगे।

1. मैंने खुद से वादा किया था सुबह जल्दी उठूँगी पर क्या रात में मैं जल्दी सोती हूँ जो सुबह जल्दी उठ पाऊँ
2. वादा था मेरा खुद से 60 मिनट्स वॉक रोज करूँगी 20 मिनट से पहले मुझे कई काम याद आ जाते है और मैं लौट पड़ती हूँ।
3. एक वादा था योग, एक्सरसाइज, ध्यान को कम से कम 20 मिनट तो दूँगी, दिये क्या? कल से शुरू करूँगी अगर नहीं कर पाई तो जिम या योग क्लास ज्वाइन करूँगी।
4. हॉ, जिम ज्वाइन किया था पर थोड़े दिनों बाद आलस आने लगा, सोचा घर में ही करूँगी। किया क्या?
5. सुबह उठते ही सोचा कि रोज मैथी, सौंफ, अजवाइन का पानी पियूंगी। पीने लगी सब को सलाह भी देने लगी थोड़े दिन बाद सुबह-सुबह जो चाय की तलब थी जोर मारने लगी। सो ये वादा भी गया। शाम को ग्रीन टी पी लूंगी।
6. नाश्ते के समय को सिर्फ फल लेने या हल्का स्प्राउट लेने का नियम तय किया, पर आज बच्चों ने जलेबी समोसे मंगा लिये। नियम को तो टूटना ही था। नियम तोड़ने के लिये ही तो होते हैं।
7. अब बारी थी घर के काम हाथ से करने की ताकि शरीर चुस्त रहे। समोसे खाकर इतना आलस आ गया कि घरेलू हेल्पर को समझा कर टी.वी. देखने बैठ गई। यूँ लिमिटेड समय टी.वी. देखने का वायदा तो गया ही, कुछ अच्छा पढ़ने लिखने का सोचा था वो अब कल करूँगी।
8. लंच तो अब हल्का ही लेना पड़ेगा। बच्चे चिल्लायेंगे, अब तुम्हारी उम्र हो गई है। हैवी ग्रेवी की सब्जी मत खाओ, मन मारकर पनीर को ताकते हुये, मूंग की दाल रोटी खा ली। चलो इक वादा पूरा किया।
9. मन नहीं भरा क्योंकि सलाद भी फीका था। डॉक्टर ने नमक चुटकी भर लेने को कहा था। मीठा तो मना ही था। कोई देख नहीं रहा, चलो एक चम्मच आइस्क्रीम चख लूँ। एक चम्मच में कुछ नहीं होता।
10. खाने के बाद डॉक्टर ने लेटने को मना किया था। एसिडिटी, रीफ्लक्स के कारण। थोड़ी देर टहल कर फिर सीरियल की चाहत ज़ोर मारने लगी। आंखे झपने लगी। वादा टूट ही गया।
11. शाम को आंख खुलते ही चाय की तलब हुई। कल से पक्का, प्रॉमिस ग्रीन टी पियूँगी। वादा टूटा तो क्या, एक दिन के बाद के बाद शुरू करूँगी।
12. चाय खाली नहीं पीते तो थोड़ा नमकीन और कुकीज ले ली। अब इतने से के लिये डॉक्टर ने मना थोड़े किया था क्योंकि हमने उसे ये बात बताई ही नहीं थी।
13. चलिये अब मैं ईवनिंग वॉक पर जाती हूँ। लीजिये सहेलियो का जमघट जमा हो गया। आज तो सुबह की छूटी वॉक का ख़ामियाजा भी भरना था। पर सबको इग्नोर थोड़ी कर सकते है सो उन्ही के बीच बैठ गई
14. आज फ्राइड राइस और दम आलू बनाने की बात थी। अब अपने लिये क्या अलग से बनाऊँ? दो कौर उसी में से ले लूँगी इतना तो चलता है।
15. बहुत हैवी खा लिया। डायटीशियन ने कहा था कि किसी भी हालत में रात के खाने को सैटल करने के लिये घूमना ही होगा। बताइये दिन भर से तो चक्कर घिन्नी की तरह घूम रही हूँ अब मुझसे वॉक नहीं होती।
16. नींद की कमी (इंसोम्निया) की समस्या है। डॉक्टर का कहना है हाथ-पैर धोकर, रौशनी बंद, कर ध्यान करने की कोशिश करे। नो मोबाइल नो टी.वी.। ओके। कोशिश करती हूं। फोन का नोटिफिकेशन टुन्न की आवाज़ करता है। बस, खुल गई नीली रौशनी की दुकान। रात 2 बजे तक इंस्टा, यू ट्यूब चलता रहा, फिर 2 से 3 बजे तक नींद नहीं आई। मना करने के बावजूद नींद की गोली ले ली।

देखिये मैंने सब बातों के लॉजिक दिये कोई वादा तोड़ा क्या? डॉक्टर का कहना था आपकी सारी समस्या नींद से जुड़ी है आपका, गट, बी.पी. डायबिटीज फिर क्या मै। अकेली हूँ जो मोबाइल का मोह छोड़ नहीं पा रही कितना कुछ अपडेट मिलता है।

दूसरे दिन मैंने सब सहेलियों को इकठ्ठा किया। मैंने दिल पे हाथ रख के अपनी परेशानी बताई और अपनी कमजोरी ज़ाहिर की। मुझे कन्फेस करते देख सब बोल पड़ी हमें भी कोई उपाय बताओ। रात 2 से 3 बजे तक हम भी मोबाइल पर ही रहते हैं। कई बार चश्मा भी भूल जाते हैं। नंबर भी बढ़ गया है। मोबाइल दूर रख के सोते हैं, फिर उठा लेते हैं। मैं स्तब्ध थी पूरा संसार इसी नाव में सवार था। वादे तोड़े जा रहे हैं। खुद का नुकसान कर रहे हैं, मालूम है पर फिर भी नहीं हो पा रहा है। अब आप बताइये और क्या कह रही है जिंदगी आपकी?

लापरवाही

विरासत के प्रति उदासीनता

फोटो एवं विवरण
बंसीलाल परमार

बीते दिनों परिवार के साथ महाकाल मंदिर में दर्शन हेतु उज्जैन गया तो शीघ्र दर्शन के प्रवेश द्वार से गुजरा। वहां अस्थायी लगे टेंट से उज्जैन ही नहीं देश गौरव महान पंडित साहित्यकार इतिहासवेत्ता श्रद्धेय पं. सूर्य नारायण व्यास का आवास दिखाई दिया। उनके अथक लेखन से कालीदास समारोह की नींव स्थापित हुई थीं। यूं तो इस रास?ते से कई बार गुजरा पर इतने समीप से पहली बार देखा। टेंट के खंबे और तिरपाल से ढंका भारती भवन के बारे में सुप्रसिद्ध बंगला साहित्यकार विमल मित्र का लिखा परिचय भी देखा। टेंट के खंबे के बीच में आने से उसे एक नजर में पढ़ नहीं पाया। मेरे जैसे अनेक लोगों की यह पीड़ा रही होगी।

मंदिर दर्शन कर पुनः वापस आया तो पंडित जी की प्रतिमा दिखी। यह मेरा सौभाग्य था। काउंटर से मोबाइल लेकर वहां तैनात कर्मचारियों की अनुमति से चित्र लिए। दुःख यह है कि यह व्यवस्था इस प्रकार भी की जा सकती थी कि इस तरह की महत्वपूर्ण स्मारक छिप न जाए। प्रबंधक शायद इस पर ध्यान देंगे।

जब बागड़ ही खाने लगे खेत...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

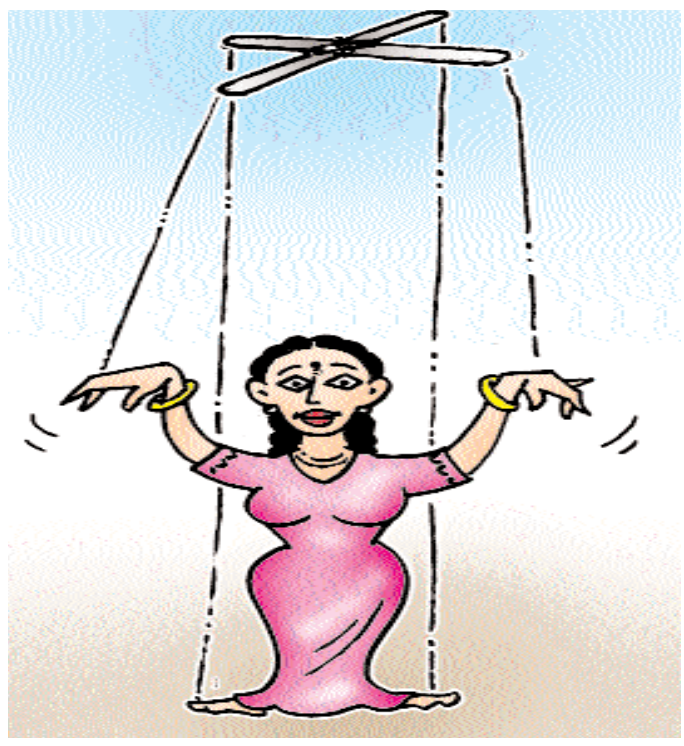

महिला आयोग के विचार से साबित हो जाता है कि समाज की महिलाओं से भी उसी शिद्दत से लड़ने की जरूरत है, क्योंकि ये महिलाएं हैं, जो सहारा देने के बजाय चोट पहुंचा रही हैं। महिलाओं को खतरा क्या सिर्फ टेलर, हेयर ड्रेसर, जिम ट्रेनर से ही है? क्या इन्होंने सोचा है कि डॉक्टर, टैक्सी ड्राइवर और डांस टीचर भी पुरुष होते हैं।

न उत्तरप्रदेश के महिला कमीशन ने बात रखी है कि महिलाओं के कपड़े के नाप अब पुरुष टेलर नहीं लेंगे। जिम और योग सेंटर में भी पुरुष नहीं। महिलाओं के बाल भी पुरुष नहीं संवारेंगे और कपड़ों की दुकान में महिला स्टाफ ही होना चाहिए। आयोग की इसी महिला ने कुछ समय पहले कहा था कि लड़कियों को मोबाइल फोन नहीं देना चाहिए, क्योंकि उनके घर से भाग जाने का खतरा बढ़ जाता है।

महिला आयोग के विचार से साबित हो जाता है कि समाज की महिलाओं से भी उसी शिद्दत से लड़ने की जरूरत है, क्योंकि ये महिलाएं हैं, जो सहारा देने के बजाय चोट पहुंचा रही हैं। महिलाओं को खतरा क्या सिर्फ टेलर, हेयर ड्रेसर, जिम ट्रेनर से ही है? क्या इन्होंने सोचा है कि डॉक्टर, टैक्सी ड्राइवर और डांस टीचर भी पुरुष होते हैं। ऐसा कौन-सा इलाका है, जहां महिला-पुरुष साथ नहीं हैं? क्या मुमकिन है कि शहर के कुछ इलाके और धीरे-धीरे आधी धरती महिलाओं को दे दी जाए और महिला-पुरुष के सारे रास्ते बंद कर दिए जाएं? महिलाओं से गलत हरकत करने वाला घर का ही होता है! क्या भूल गए हैं कि ऐसा करके महिलाओं से हक छीन रहे हैं कि तय कर सकें कि किस टेलर से कपड़े सिलवाने हैं, किससे बाल बनवाने हैं और किससे डांस सीखना है। जिम जाने वाली लड़की या महिला इतनी कमजोर नहीं है कि उसे महिला आयोग की का सहारा लेना पड़े।

आखिर कब तक हम ऐसे नियम-कायदे बनाते रहेंगे, जो महिलाओं से जीने का हक छीन लें! पुरुषों के लिए ऐसा कोई नियम-कानून क्यों नहीं कि अगर किसी लड़की या महिला को गलत तरीके से छुआ या ऐसी ही बेजा हरकत पर सजा मिलेगी। जब भी ऐसी कोई बात होगी, तब आयोग में से ही कोई बताने आएगी कि लड़की की ही गलती रही होगी कि गलत छुआ या गलत बात कही या जोर जबर्दस्ती की।

कैद में रहने वाली सीता की अग्नि परीक्षा करवाने वाले समाज से और क्या उम्मीद की जा सकती है! आयोग यह तो कहने से रहा कि हम चौबीस घंटे मदद की मांग करते हैं, ताकि जब भी किसी लड़की या महिला को जरूरत हो जल्द से जल्द पहुंच जाएं, फिर वो पुरुष टेलर हो या स्कूल टीचर या डॉक्टर। अगर कहीं गलत हुआ है तो सजा दी जाएगी। पुरुषों को आयोग न तो कुछ कह सकता है, न ही उन्हें रोक सकता है, यह सिर्फ आधी आबादी को कठपुतली बनाना चाहता है।